सांध्य दैनिक 4PM

यदि बोलने की स्वतंत्रता छीन ली जाये तो शायद गूंगे और मौन हम उसी तरह संचालित होंगे जैसे भेड़ को बलि के लिए ले जाया जा रहा हो।
-जार्ज वाशिंगटन

मूल्य ₹ 3/-

जिद...सच की

www.4pm.co.in | www.facebook.com/4pmnewsnetwork | @Editor_Sanjay | YouTube @4pm NEWS NETWORK

● वर्षः 10 ● अंकः 141 ● पृष्ठः 8 ● लखनऊ, बुधवार, 26 जून, 2024

भारत के पास इंग्लैंड से बदला लेने... 7 | राहुल के 'लोक' ने ध्वस्त किया... 3 | बिना शर्त हो निर्दोष लोगों की... 2

विपक्ष ने चली सधी रणनीति, वोटिंग न कराके भाजपा को किया चित

सियासी उठापटक के बीच फिर लोकसभा अध्यक्ष चुने गए बिरला

- भाजपा व सहयोगी दलों ने किया समर्थन
- मोदी ने अध्यक्ष पद के लिए ओम बिरला के नाम का प्रस्ताव रखा, राजनाथ सिंह ने किया अनुमोदन
- मोदी, राहुल गांधी और रिजिजू ने दी बधाई
- विपक्ष ने के. सुरेश को बनाया था उम्मीदवार
- दूसरी बार लोकसभा अध्यक्ष बनने वाले तीसरे व्यक्ति बने बिरला

4पीएम न्यूज़ नेटवर्क

नई दिल्ली। काफी सियासी उठापटक के बीच ओम बिरला एकबार फिर लोकसभा स्पीकर चुन लिए गए। उनके मनोनयन के बाद उन्हे पीएम मोदी व नेता प्रतिपक्ष राहुल गांधी ने बधाई दी। ओम बिरला दूसरी बार लोकसभा स्पीकर चुने गए हैं। बिरला को ध्वनिमत से 18वीं लोकसभा का नया स्पीकर चुना गया। वहीं विपक्ष की ओर से के .सुरेश उम्मीदवार बनाए गए थे। बिरला के स्पीकर बनने के बाद पीएम मोदी और नेता विपक्ष राहुल गांधी उन्हें आसन तक लेकर पहुंचे। उधर ध्वनिमत पर विपक्ष ने डिविजन की मांग नहीं की।

इस फैसले से इंडिया गठबंधन ने भाजपा को चित करते हुए उसे लाजवाब कर दिया। ओम बिरला के नाम पर विपक्ष का विरोध न करना मोदी सरकार के लिए भी किसी सरप्राइज से कम नहीं रहा। उम्मीद यही की जा रही थी कि विपक्ष वोटिंग की मांग करेगा और फिर पूरी प्रक्रिया के तहत मतदान होगा। लेकिन अचानक ट्विस्ट तब आया जब ध्वनिमत से बिरला को अध्यक्ष चुने जाने पर विपक्ष ने वोटिंग की मांग ही नहीं रखी और इसे मान लिया। पीएम मोदी ने दूसरी बार लोकसभा अध्यक्ष बनने पर ओम बिरला को बधाई दी। कोटा से तीसरी बार के सांसद ओम बिरला ने दूसरी बार लोकसभा अध्यक्ष का बनकर इतिहास रच दिया है। लगातार दूसरी बार लोकसभा अध्यक्ष बनने वाले वह तीसरे शख्स हैं। उनसे पहले बलराम जाखड़ 9 सालों तक स्पीकर रहे थे। अगर बिरला पूरे 5 सालों तक स्पीकर बने रहते है,तो यह एक रिकॉर्ड बनेगा। अब तक कोई भी 10 सालों तक स्पीकर नहीं रहा है।

आने वाले पांच साल तक सभी का मार्गदर्शन करते रहेंगे नए स्पीकर : पीएम मोदी

ओम बिरला के लोकसभा अध्यक्ष चुने जाने के बाद पीएम मोदी ने कहा कि हमारा विश्वास है कि आप आने वाले पांच साल तक हम सभी का मार्गदर्शन करते रहेंगे। बता दें कि प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी ने अध्यक्ष पद के लिए ओम बिरला के नाम का प्रस्ताव रखा था, जिसका रक्षा मंत्री राजनाथ सिंह ने अनुमोदन किया। इस प्रस्ताव को प्रोटेम स्पीकर (कार्यवाहक अध्यक्ष) भर्तृहरि महताब ने सदन में मतदान के लिए रखा और इसे सदन ने ध्वनिमत से मंजूरी दे दी। इसके बाद कार्यवाहक अध्यक्ष महताब ने बिरला को लोकसभा अध्यक्ष चुने जाने की घोषणा की। पीएम मोदी और नेता प्रतिपक्ष राहुल गांधी और संसदीय कार्य मंत्री किरेन रीजीजू बिरला को अध्यक्षीय आसन तक लेकर गए. जब बिरला ने अध्यक्षीय आसन ग्रहण किया तो मोदी, राहुल गांधी और रीजीजू ने उन्हें बधाई और शुभकामना दी।

चिराग पासवान जीतन राम मांझी ने किया समर्थन

पीएम मोदी के प्रस्ताव पर जदयू के ललन सिंह, अनुप्रिया पटेल, चिराग पासवान समेत एनडीए के सहयोगी दलों ने समर्थन किया। इसके अलावा बीजेपी के तमाम सांसदों ने भी इस प्रस्ताव का समर्थन किया।

विपक्ष भी भारत की जनता की आवाज : राहुल गांधी

ओम बिरला के लोकसभा अध्यक्ष बनने पर राहुल गांधी ने कहा, मुझे विश्वास है कि आप हमें बोलने देंगे। नये अध्यक्ष को उनके आसन तक पहुंचाने से पहले प्रधानमंत्री मोदी और राहुल गांधी ने एक दूसरे के साथ संक्षिप्त मित्रता भी साझा की और दोनों ने मुस्कुराते हुए हाथ मिलाया तथा ओम बिरला का स्वागत किया। ओम बिरला अध्यक्ष की कुर्सी पर बैठते समय मुस्कुरा रहे थे। गांधी ने कहा कि पूरे विपक्ष और इंडिया गठबंधन की ओर से आपको बधाई। विपक्ष को बोलने का मौका देकर आप भारत के संविधान की रक्षा करने का अपना कर्तव्य निभाएंगे। गांधी ने कहा कि सरकार के पास राजनीतिक शक्ति हो सकती है, लेकिन विपक्ष भी लोगों की आवाज का प्रतिनिधित्व करता है। ओम बिरला लोकसभा अध्यक्ष चुने गए प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने भी बिरला को बधाई देते हुए विश्वास जताया कि वे सांसदों का मार्गदर्शन करेंगे और लोगों की उम्मीदों को पूरा करने में सदन में बड़ी भूमिका निभाएंगे। द्विदलीय माहौल में मोदी, गांधी और संसदीय कार्य मंत्री किरेन रिजिजू ने बिरला को उनके चुनाव के बाद संयुक्त रूप से अध्यक्ष की कुर्सी तक पहुंचाया। विपक्षी दलों द्वारा कांग्रेस सदस्य के सुरेश को इस पद के लिए चुने जाने के बाद सदन ने ध्वनिमत से बिरला को चुना।

राहुल ने जब मोदी से मिलाया हाथ, गूंज उठा पूरा सदन

राहुल गांधी सदन में मौजूद पीएम मोदी से हाथ मिलाते हुए नजर आए। सदन में इस नजारे ने सभी सांसदों का ध्यान अपनी तरफ खींच लिया। स्पीकर चुने जाने के बाद प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी स्पीकर ओम बिरला की सीट पर आए और उन्हें बधाई दी। ये परंपरा रही है कि सदन के नेता यानि प्रधानमंत्री और नेता विपक्ष, लोकसभा अध्यक्ष पद के लिए चुने गए सांसद को उनकी सीट से लेकर अध्यक्ष की कुर्सी तक लेकर जाते हैं। सांसद ओम बिरला को जब अध्यक्ष चुना गया, तो इसके बाद प्रधानमंत्री मोदी और नेता विपक्ष राहुल गांधी उनकी सीट तक गए। इस दौरान पीएम मोदी और राहुल गांधी ने हाथ मिलाया। यह एक ऐतिहासिक पल था।

बिरला के नाम दर्ज होगा रिकॉर्ड

पांचवीं बार ऐसा हो रहा है कि कोई अध्यक्ष एक लोकसभा से अधिक कार्यकाल तक इस पद पर आसीन रहेगा। कांग्रेस नेता बलराम जाखड़ एकमात्र ऐसे पीठासीन अधिकारी रहे, जिन्होंने सातवीं और आठवीं लोकसभा में दो कार्यकाल पूरे किए हैं। राजस्थान के कोटा से तीन बार के सांसद ओम बिरला राजस्थान में तीन बार विधायक भी रह चुके हैं। भाजयुमो के राष्ट्रीय उपाध्यक्ष भी रहे। बतौर सांसद पहले कार्यकाल में 86 फीसदी उपस्थिति के साथ 671 प्रश्न और 163 बहसों में भागीदारी की थी। 2019 में दूसरी बार सांसद बनने पर लोकसभा अध्यक्ष बनाया गया। बिरला के कार्यकाल में नए संसद भवन का निर्माण हुआ। तीन आपराधिक कानून, अनुच्छेद 370 को हटाने, नागरिकता संशोधन अधिनियम समेत कई ऐतिहासिक कानून भी पारित हुए। उन्होंने लोकसभा के 100 सांसदों के निलंबन व संसद की सुरक्षा पर कुछ कड़े फैसले लिए।

हर सदस्य को बराबरी का मौका और सम्मान मिले : अखिलेश

सपा अध्यक्ष अखिलेश यादव ने भी ओम बिरला को स्पीकर बनने की बधाई दी। अखिलेश यादव ने कहा कि उम्मीद है कि आप हर सांसद को बराबरी का मौका देंगे। आप मुख्य न्यायाधीश की तरह बैठे हैं। उम्मीद है कि किसी की आवाज न दबाई जाएगी और न किसी के निष्कासन जैसी कार्रवाई होगी। जिस पद पर आप बैठे हैं, उससे बहुत गौरवशाली परंपराएं जुड़ी हुई हैं। मुझे उम्मीद है कि यह बिना भेदभाव के आगे बढ़ेगा। आपका अंकुश विपक्ष पर तो रहता ही है, उम्मीद है कि सत्तापक्ष पर भी रहे। सदन में अखिलेश यादव ने स्पीकर की कुर्सी को लेकर भी चुटकी लेते नजर आए। उन्होंने कहा, मैं सदन में पहली बार आया हूं। मुझे लगा हमारे स्पीकर की कुर्सी बहुत ऊंची होगी, क्योंकि मैं जिस सदन को छोड़कर आया हूं, मैं किससे कहूं कि यह कुर्सी और ऊंची हो जाए। अखिलेश यादव ने ओम बिरला को बधाई देते इशारों ही इशारों में कई कटाक्ष भी किए। सपा मुखिया ने नए स्पीकर से कहा कि हम आपके सभी न्यायोचित निर्णयों के साथ खड़े रहेंगे और उम्मीद करते हैं कि केवल विपक्ष को ही नियंत्रण में नहीं रखा जाएगा। लोकसभा अध्यक्ष बिरला को बधाई देते अखिलेश यादव ने कहा, मैं आपकी पीठ के पीछे देख रहा हूं कि पत्थर तो सही लगे हैं, लेकिन कुछ दरार में मुझे सीमेंट अभी भी लगा दिखाई दे रहा है।अखिलेश ने कहा कि उम्मीद करते हैं कि आप के इशारे पर सदन चले इसका उल्टा न हो। आपके पास 5 साल का अनुभव है. अब आप दोबारा स्पीकर चुने गए हैं, मैं अपनी और अपने साथियों की तरफ से आपको बहुत-बहुत बधाई देता हूं।

बिना शर्त हो निर्दोष लोगों की रिहाई : मायावती

बलौदाबाजार हिंसा पर छत्तीसगढ़ सरकार को बसपा सुप्रीमो ने घेरा

4पीएम न्यूज़ नेटवर्क

रायपुर। बलौदाबाजार हिंसा पर राजनीति थमने का नाम नहीं ले रही है। अब इस मामले में उत्तर प्रदेश की पूर्व मुख्यमंत्री और बहुजन समाज पार्टी (बसपा) की सुप्रीमो मायावती की भी एंट्री हो चुकी है। बलौदाबाजार हिंसा को लेकर उन्होंने सोशल मीडिया प्लेटफॉर्म एक्स पर चिंता जताते हुए अपनी प्रतिक्रिया दी है। इसके जवाब में छत्तीसगढ़ के मुखिया सीएम विष्णुदेव साय ने एक्स पर लिखा कि छत्तीसगढ़ शांति का टापू है। इसे बनाए रखने की हरसंभव कोशिश की जाएगी।

बलौदाबाजार हिंसा और आगजनी की घटना को बसपा प्रमुख ने षड्यंत्रकारी असामाजिक तत्वों की ओर से की गई कार्रवाई बताया और इसकी कड़ी निंदा की है। जिस पर छत्तीसगढ़ के मुख्यमंत्री साय ने अपनी प्रतिक्रिया देते हुए कहा कि छत्तीसगढ़ शांति का टापू है और इसे बनाए रखने कि हर संभव कोशिश की जाएगी। कुछ निहित स्वार्थी तत्व राजनीतिक प्रश्रय पाकर समाज मे विष बोने का काम कर रहे हैं, उनसे कड़ाई से निपटा जाएगा। मुख्यमंत्री ने उपद्रवियों की निंदा किये जाने पर बसपा सुप्रीमो मायावती

का आभार जताया है। उत्तर प्रदेश की पूर्व मुख्यमंत्री मायावती ने अपने ङ्क हैन्डल पर लगातार तीन ट्वीट कर लिखा कि छत्तीसगढ़ में सतनामी समाज के आस्था के केन्द्र गिरौदपुरी से लगा हुआ अमर गुफा में असामाजिक तत्वों के द्वारा परमपूज्य बाबा गुरूघासी दास जी के जय स्तंभ को काटकर फेक दिया जाना अति-चिन्ताजनक। दूसरे ट्वीट में लिखा किइसके विरोध में सतनामी समाज द्वारा सीबीआई जांच की मांग को लेकर बलौदाबाजार में किये गये धरना प्रदर्शन के दौरान कलेक्टर परिसर में षड्यंत्रकारी असामाजिक तत्वों द्वारा की गई तोड़-फोड़ आदि की घटना भी अति निदंनीय है।

छत्तीसगढ़ शांति का टापू है और इसे बनाये रखने की हरसंभव की जायेगी कोशिश : साय

छत्तीसगढ़ के मुख्यमंत्री विष्णुदेव साय ने अपने एक्स हैन्डल पर जवाब देते हुए लिखा कि धन्यवाद मायावती जी। छत्तीसगढ़ शांति का टापू है और इसे बनाये रखने की हरसंभव कोशिश की जायेगी। प्रदेश की शांति व्यवस्था को कायम रखना हमारी सरकार की प्राथमिकता है। कुछ निहित स्वार्थी तत्व राजनीतिक प्रश्रय पाकर समाज में विष बोने का काम कर रहे हैं, उनसे कड़ाई से निपटा जायेगा। हर समाज के लोग यहां आपस में सौहार्द के साथ रहते हैं। आपने उपद्रवियों की निंदा की इसके लिए पुनः धन्यवाद आपका। पूज्य गुरु घासीदास के उपदेश हमारे लिए प्रेरक हैं। 'मनखे मनखे एक समान' की भावना से ही हमारी सरकार काम कर रही है। धन्यवाद सुश्री मायावती जी। छत्तीसगढ़ शांति का टापू है और इसे बनाये रखने की हरसंभव कोशिश की जायेगी। प्रदेश की शांति व्यवस्था को कायम रखना हमारी सरकार की प्राथमिकता है।

बीजेपी सरकार में मुख्यमंत्रियों के साथ दिक्कत ही दिक्कत : अखिलेश यादव

बोले- मैं सीएम रहा हूं, तकलीफ जानता हूं

दिल्ली सरकार में मंत्री आतिशी से मिलकर लौटे सपा नेता

4पीएम न्यूज़ नेटवर्क

नई दिल्ली। समाजवादी पार्टी के राष्ट्रीय अध्यक्ष अखिलेश यादव ने दिल्ली सरकार में मंत्री आतिशी से अस्पताल में मुलाकात की। मुलाकात के बाद अखिलेश ने कहा कि मैं आज उनके स्वास्थ्य की जानकारी लेने आया था। आतिशी हमेशा दिल्ली के जनता के लिए हमेशा लड़ती रहीं हैं। भारतीय जनता पार्टी नीत केंद्र सरकार को घेरते हुए अखिलेश ने कहा कि मैं मुख्यमंत्री रहा हूं। तकलीफ जानता हूं। बीजेपी सरकार जबसे बनी है तब से मुख्यमंत्रियों के साथ बड़ी दिक्कत हो रही है।

सपा प्रमुख ने कहा कि दिल्ली के सीएम अरविंद केदरीवाल केजरीवाल जनता के लिए काम करना चाहते हैं। बीजेपी वाले केजरीवाल को बाहर निकलने देना नहीं चाहते। उन्होंने आरोप लगाया कि बीजेपी सीबीआई का गलत इस्तेमाल कर रही है। इस बार बीजेपी बच गई नहीं तो सफाया हो गया होता। गौरतलब हो कि आतिशी को लोकनायक अस्पताल के आईसीयू में भर्ती कराया गया है। फिलहाल उनके अनशन पर विराम लग गया है। जांच के दौरान ब्लड शुगर बहुत कम पाया गया। इसे देखते हुए उन्हें आईसीयू में रखा गया है। जब आतिशी अस्पताल में भर्ती हुई थीं, तब उनका ब्लड शुगर 44 था। यूरीन में कीटोन थे। उनके ईसीजी में भी बदलाव पाए गए हैं, इसलिए उनको आईसीयू में रखना पड़ा। फिलहाल उनकी हालत स्थिर है। वे फल ले रही हैं। अभी कुछ और ब्लड टेस्ट किए जाएंगे।

भाजपा को रोकने के लिए रास चुनाव में साथ आएं विपक्षी : दुष्यंत चौटाला

बोले- सामाजिक व्यक्ति को उच्च सदन में भेजें

4पीएम न्यूज़ नेटवर्क

जींद (हरियाणा)। जजपा नेता दुष्यंत चौटाला ने कहा कि हरियाणा के जींद के उचाना कलां विधानसभा क्षेत्र से ही चुनाव लड़ूंगा। किसी को इसमें कोई संदेह नहीं होना चाहिए। राज्यसभा सीट को लेकर सभी विपक्षी को एक साथ आना चाहिए, ताकि भाजपा को टक्कर दी जा सके। उन्होंने नीट पेपर लीक मामले को गंभीर बताते हुए कहा कि सुप्रीम कोर्ट के सिटिंग जज से इस मामले की जांच होनी चाहिए।

हरियाणा में भी पेपर लीक हुए थे। इनमें कांग्रेस और भाजपा के लोगों की मिलीभगत देखने के लिए मिली थी, इसलिए कहीं न कहीं दोनों राष्ट्रीय पार्टियां मिलकर इस मामले को दबाना चाहती हैं। पेपर लीक के पीड़ित विद्यार्थियों के साथ जजपा खड़ी है। राज्यसभा चुनाव के सवाल पर उन्होंने कहा कि विपक्ष एकजुट होकर सामाजिक तौर पर कोई मजबूत उम्मीदवार चुने और किसी अच्छे सामाजिक व्यक्ति को राज्यसभा भेजे। अगर कांग्रेस कोई उम्मीदवार नहीं उतारना चाहती है

दीपेंद्र हुड्डा ने हरियाणा सरकार पर बोला हमला

हरियाणा सरकार के सामाजिक आर्थिक आधार पर अतिरिक्त अंक देने के फैसले को कोर्ट ने असंवैधानिक करार दिया और इन अंकों को गलत ठहराया। इसके साथ ही कोर्ट ने सरकार

को नए सिरे से रिजल्ट जारी करने के आदेश दिए थे। इसको लेकर सरकार सुप्रीम कोर्ट पहुंची और वहां हाई कोर्ट के फैसले को चुनौती दी, लेकिन वहां से भी सरकार को करारा झटका लगा। इसके बाद विपक्षी नेताओं ने भाजपा को रोजगार के मुद्दे पर घेरना शुरू कर दिया है। रोहतक से सांसद दीपेंद्र हुड्डा ने कहा कि सीईटी पर सुप्रीम कोर्ट के फैसले से स्पष्ट है कि बीजेपी सरकार नौकरी देना तो दूर, सही ढंग से नियम भी नहीं बना सकती न ही उनकी अदालत में मजबूती से पैरवी कर सकती है। आज हालत ये है कि भीषण बेरोजगारी झेल रहा हरियाणवी युवा बीजेपी सरकार की दोषपूर्ण नीतियों का शिकार हो रहा है।

भाजपा प्रभावित कर सकती है चुनाव : प्रतिभा

हर बूथ पर कड़ी निगरानी रखें कार्यकर्ता

4पीएम न्यूज़ नेटवर्क

शिमला। प्रदेश कांग्रेस अध्यक्ष प्रतिभा सिंह ने कांगड़ा, हमीरपुर और सोलन के जिला अध्यक्षों व पदाधिकारियों से देहरा, हमीरपुर व नालागढ़ ब्लॉक के सभी पदाधिकारियों के साथ पूरे तालमेल व आपसी समन्वय से चुनाव मैदान में डटने को कहा है। उन्होंने कहा कि कमियों को दूर करने के लिए फील्ड की पूरी रिपोर्ट समय से आनी चाहिए। उन्होंने कहा कि हर बूथ पर कड़ी निगरानी रखी जानी चाहिए।

भाजपा किसी भी तरह से चुनाव प्रक्रिया को प्रभावित कर सकती है। प्रतिभा सिंह ने कहा है कि भाजपा विधानसभा उपचुनाव की तीन सीटों पर अपनी हार को देखते हुए कांग्रेस सरकार पर निराधार आरोप लगा रही है। उन्होंने कहा कि कांग्रेस लोकतंत्र में पूरा विश्वास रखते हुए इसकी मर्यादाओं का पालन करती है। भाजपा मुद्दों पर कोई बात नहीं करती। प्रदेश में विधानसभा उपचुनाव क्यों हुए, इस बारे उन्हें लोगों को सच्ची जानकारी देनी चाहिए। क्या बजह थी कि प्रदेश में भाजपा की ओर से पूर्ण बहुमत

वाली कांग्रेस सरकार को अस्थिर करने की कोशिश की। उन्होंने भाजपा के उस दावे को भी पूरी तरह खारिज किया है, जिसमें उसके नेता 13 जुलाई के बाद प्रदेश में भाजपा सरकार बनाने का दावा कर रहे हैं। कांग्रेस के विधायकों की संख्या अभी भी पूर्ण बहुमत से अधिक है और चुनाव परिणाम आने के बाद यह संख्या बढ़कर 41 होने जा रही है। प्रतिभा सिंह ने कहा कि वह जल्द ही इन तीनों विधानसभा क्षेत्रों का दौरा करेंगी।

लोस चुनाव में सही जनादेश भाजपा को भी आ गया था अहंकार : शांता कुमार

पूर्व मुख्यमंत्री शांता कुमार ने वर्तमान मुख्यमंत्री की पत्नी को देहरा विधानसभा उपचुनाव में दिए गए टिकट को लेकर परिवारवाद पर तीखा सियासी प्रहार किया है। शांता कुमार कहा कि परिवारवाद की यह सबसे घटिया मिसाल है। साथ ही उन्होंने कहा कि देश में हुए लोकसभा चुनाव से वह बहुत खुश हैं। देश की जनता ने बहुत अच्छा जनादेश दिया है। इसमें विपक्ष को भी जिंदा रखा और नरेंद्र मोदी की सरकार भी बनाई। विपक्ष न होने से भाजपा को भी अहंकार आ गया था। पालमपुर में पत्रकारों से बात करते हुए भाजपा के वरिष्ठ नेता शांता कुमार ने कहा कि प्रदेश में कोई कांग्रेस कार्यकर्ता या देहरा से कोई नेता नहीं था जो मुख्यमंत्री के पत्नी को टिकट दिया। देश में यह शायद पहला मौका है कि किसी मुख्यमंत्री ने अपनी पत्नी को टिकट दिया है। जो परिवारवाद की सबसे घटिया मिसाल है। शांता कुमार ने कहा कि वह चाहते तो अपनी पत्नी और बेटे को सांसद या विधायक बना सकते थे, लेकिन वह और उनकी पत्नी राजनीति में परिवारवाद से हमेशा दूर रहे। कहा कि 1989 में वह लोकसभा चुनाव भी जीते थे।

किरण चौधरी के खिलाफ कांग्रेस ने खोला मोर्चा

4पीएम न्यूज़ नेटवर्क

चंडीगढ़। भाजपा में शामिल तोशाम की विधायक एवं पूर्व मंत्री किरण चौधरी के खिलाफ दल-बदल कानून के तहत कार्रवाई की मांग को लेकर कांग्रेस एकबार फिर विधानसभा स्पीकर के पास पहुंची है। किरण चौधरी हाल ही में भाजपा में शामिल हुई हैं।

केंद्रीय मंत्री मनोहर लाल और मुख्यमंत्री नायब सिंह सैनी की मौजूदगी में भाजपा में शामिल होने के बाद किरण चौधरी भाजपा अध्यक्ष जेपी नड्डा और केंद्रीय गृह मंत्री अमित शाह से भी मिली थी, लेकिन उन्होंने कांग्रेस के विधायक पद से अभी तक इस्तीफा नहीं दिया है। किरण के भाजपा में शामिल होने के अगले दिन विधानसभा स्पीकर को पत्र लिखकर किरण चौधरी की विधानसभा से सदस्यता रद्द करने की मांग की थी विधानसभा स्पीकर द्वारा अभी तक किरण चौधरी, जजपा विधायक जोगी राम सिहाग और रामनिवास सुरजाखेड़ा की विधानसभा की सदस्यता रद्द करने पर कोई फैसला नहीं लिया गया है। सिहाग और सुरजाखेड़ा के विरुद्ध कार्रवाई के लिए जजपा ने स्पीकर को लिखकर दिया हुआ है।

बामुलाहिजा

कार्टून: हसन जैदी

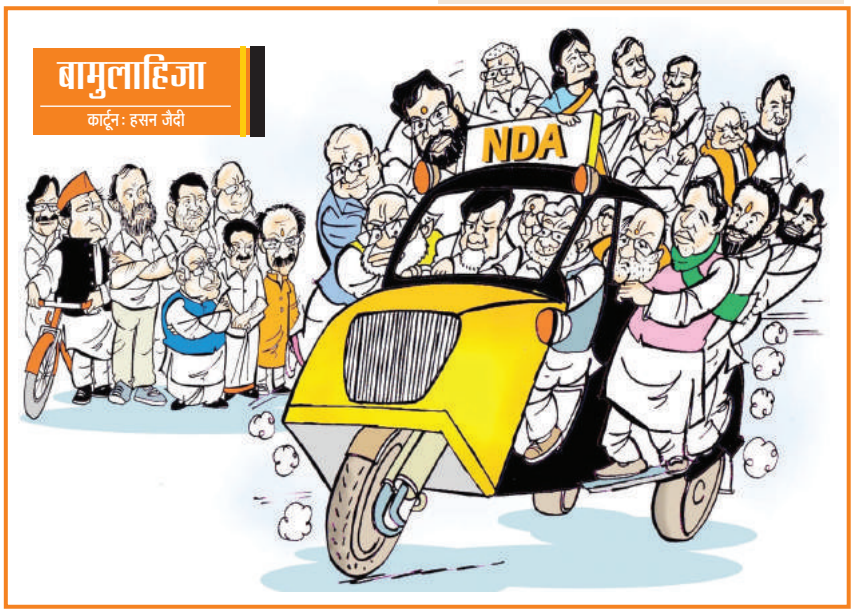

राहुल के 'लोक' ने ध्वस्त किया मोदी का 'तंत्र'

नतीजों ने लोकतंत्र पर खतरे को भी किया कम

- चुनावों में हार कर भी जीत गए राहुल
- राहुल ने दिखाई संविधान की ताकत
- वैश्विक स्तर पर भी मजबूत हुई कांग्रेस नेता की छवि
- संविधान बदलने की बात करने वाले हुए नतमस्तक

4पीएम न्यूज़ नेटवर्क

नई दिल्ली। देश में लोकसभा चुनाव के बाद नई सरकार का गठन हो चुका है और अब 18वीं लोकसभा का पहला सदन भी जारी है। इस बार लोकसभा के अंदर का माहौल बदला हुआ है और पिछले दो कार्यकालों से निर्बल बना बैठा विपक्ष इस बार काफी मजबूत और उत्साहित है। इसकी झलक लोकसभा के पहले सत्र में ही देखने को मिल रही है। ये एक मजबूत संख्या बल होने का ही नतीजा है कि विपक्ष डिप्टी स्पीकर के पद पर अड़ गया और सरकार न मानने पर उसने लोकसभा अध्यक्ष के चुनाव में अपना उम्मीदवार उतार दिया। जिसके चलते देश के इतिहास में पहली बार लोकसभा अध्यक्ष के पद के लिए चुनाव हुए। बेशक संख्या बल में विपक्ष सरकार से पीछे है, लेकिन खुद के मजबूत होने का एहसास दिलाने के लिए विपक्ष ने कदम उठाया। परिणाम जो भी रहे हों, लेकिन विपक्ष के इस कदम की सराहना की जानी चाहिए। ये तभी संभव हो पाया है जब विपक्ष के पास एक मजबूत संख्या बल है, वर्ना अगर पिछले दो कार्यकालों वाला विपक्ष होता तो शायद वो ये कदम उठाने की जेहमत कभी नहीं कर पाता। इसीलिए ये कहा जाता है कि एक मजबूत लोकतंत्र के लिए मजबूत विपक्ष का होना अत्यंत आवश्यक है।

ये विपक्ष के मजबूत होने का ही नतीजा है कि देश के अंदर नई सरकार का गठन होने के 15 दिन के अंदर ही विपक्ष देश में हुए पेपर लीक मामलों को लेकर सरकार पर पूरी तरह से हावी नजर आया। पेपर लीक पर विपक्ष ने पूरी ताकत के साथ सरकार का घेराव किया और शिक्षा मंत्री के इस्तीफे तक की मांग की। वहीं सरकार के लिए आए दिन हो रहे पेपर लीक और परीक्षाओं का स्थगित होना काफी शर्मनाक है। यही कारण है कि अभी सरकार बने 15 दिन ही हुए हैं लेकिन देश की नई खिचड़ी सरकार लगातार मुश्किलों में घिरी हुई है। विपक्ष से लेकर देश का युवा तक हर कोई प्रधानमंत्री मोदी के नेतृत्व वाली एनडीए सरकार पर सवाल उठा रहा है। युवाओं के भविष्य और शिक्षा के साथ हो रहे खिलवाड़ पर सरकार से जवाब मांग रहा है। लेकिन अक्सर देश के मुद्दों पर चुप्पी साध लेने वाले और जनता के सवालों से बचकर भागने वाले हमारे देश के नॉन बॉयोलॉजिकल प्रधानमंत्री देश में लगातार हो रहे पेपर लीक और युवाओं के भविष्य से खिलवाड़ के मुद्दे पर भी मौन साधे हुए हैं। देश में पेपर लीक मुद्दा जब गरमाया था और युवा व छात्र अपने हक के लिए सड़कों पर उतरकर सरकार से जवाब मांग रहे थे, तब हमारे देश के प्रधानमंत्री विदेश घूमने के लिए निकल लिए थे। बेशक वहां जाना एक जरूरी कार्य था, लेकिन क्या अपने देश के मुद्दों पर बोलना, छात्रों और युवाओं के भविष्य के लिए कोई फैसला लेना पीएम के लिए जरूरी ही नहीं है? प्रधानमंत्री ने तो इस तरह से चुप्पी साध ली जैसे उनके लिए पेपर लीक और युवाओं का भविष्य कोई मायने ही नहीं रखता।

शायद प्रधानमंत्री और पूरी भाजपा की इसी लापरवाही का नतीजा है कि जनता ने इस चुनाव में उन्हें बड़े जोर का झटका जोरों से ही दिया। इतना ही नहीं पार्टी के अंदर भी और बीजेपी की मातृशक्ति कहे जाने वाले संघ ने भी गुजरात लॉबी व नॉन बॉयोलॉजिकल अहंकारी तानाशाह को जमकर लताड़ लगाई है। या यूं कहें कि रोज ही लगाई जा रही है। बेशक 400 का ख्वाब देखकर संविधान बदलने की हसरत पालने वाली बीजेपी 240 सीटों पर सिमट गई और बैसाखियों के सहारे उसने एनडीए की खिचड़ी सरकार भी बना ली। मोदी-मोदी का अहंकार करने वाले नरेंद्र मोदी एनडीए के प्रधानमंत्री भी बन गए। दूसरी ओर इंडिया गठबंधन काफी मशक्कत के बाद भी सरकार बनाने से दूर रह गया है। बेशक कांग्रेस की सीटें दोगुनी हो गईं और बीजेपी को 400 तो दूर पूर्ण बहुमत तक से दूर कर दिया। यही कारण है कि लोकसभा चुनाव के परिणामों में बीजेपी जहां जीत कर भी हार गई। वहीं दूसरी ओर कांग्रेस व इंडिया गठबंधन हार कर भी जीत गया और अपने लक्ष्य को काफी हद तक पा भी लिया। इसीलिए चुनाव परिणाम के बाद जहां साहेब और छोटे साहेब मुंह लटकाए हुए थे। वहीं दूसरी ओर राहुल गांधी और इंडिया गठबंधन के नेताओं के चेहरे पर खुशी झलक रही थी और जश्न मना रहे थे। दरअसल, ये चुनाव नतीजे इंडिया गठबंधन व कांग्रेस की जीत इसलिए भी हैं क्योंकि चुनाव में बीजेपी जहां 400 सीटें जीतने का दंभ भर रही थी और उसके कुछ नेता 400 सीटें जीतकर संविधान बदलने की बात कर रहे थे। वहीं दूसरी ओर राहुल गांधी व इंडिया गठबंधन पूरा चुनाव संविधान को बचाने के लिए ही लड़ रहे थे। बाद में जब नतीजे आए और पीएम मोदी ने संविधान को अपने माथे से लगाया, उसकी वंदना की। तो इस एक दृष्य ने लोकतंत्र की ताकत और नतीजों का पूरा सार समझाकर रख दिया।

साधारण जनता के नेता बनकर उभरे राहुल

इन लोकसभा चुनाव के नतीजों में अगर सबसे बड़ी जीत किसी की हुई है या सबसे मुखर तरीके से कोई उभर कर आया है तो वो हैं कांग्रेस के पूर्व अध्यक्ष राहुल गांधी। इन नतीजों में एक ओर नरेंद्र मोदी जहां जीतकर भी हार गए , तो वहीं राहुल गांधी हार कर भी जीते नजर आते हैं। 2024 के चुनाव में अगर सबसे बड़ा राजनीतिक व्यक्तित्व किसी का निर्मित हुआ है तो वे राहुल गांधी ही हैं। राहुल गांधी ने खुद को साधारण जनता का नेता और मोदी को कॉरपोरेट शक्तियों का नेता साबित कर दिया। ये इसलिए भी मोदी व बीजेपी की हार है क्योंकि 2014 में जैसे ही बीजेपी सत्ता में आई और नरेंद्र मोदी प्रधानमंत्री बने, वैसे ही लोकतंत्र, सामाजिक न्याय, धर्मनिरपेक्षता और संघीय ढांचे पर व्यवस्थित हमले शुरू कर दिए गए। जनपक्षीय आर्थिक नीतियों को तिलांजलि दे दी गई। धर्म को राजनीति का आधार बनाया गया। जनता में धर्मांधता पैदा की गई। सवैधानिक संस्थानों को भीतर से खोखला किया और महंगाई और बेरोजगारी फैल गई। हताश और निराश जनता को धर्म की घुट्टी पिलाकर सत्ता में बने रहने की योजना पर काम शुरू हुआ। 2019 के बाद से तो मानो दुनिया के सबसे बड़े लोकतांत्रिक देश में लोकतंत्र ही खतरे में पड़ता दिखाई देने लगा। पिछले कुछ सालों में बीजेपी ने जिस तरह से लोकतंत्र को खत्म करने और कमजोर विपक्ष को कुचलने का काम किया है। वो किसी भी लोकतांत्रिक देश में सोचना भी बड़ी बात है। हालांकि, इस पूरे दौरान कांग्रेस शुरू से इनके रास्ते में बाधा रही है। इस बाधा को दूर करने के लिए और कांग्रेस को कमजोर करने के लिए बीजेपी द्वारा कांग्रेस के सर्वोच्च नेता राहुल गांधी की विश्वसनीयता को जनता में खत्म करने की नीति अपनाई गई।

फेल हुआ बीजेपी का राहुल को पप्पू बनाने का प्रयास

राहुल गांधी की छवि को लगातार बर्बाद करने और उन्हें अपरिपक्व दिखाने का प्रयास किया गया है। इसके लिए बीजेपी ने अपना स्तर इतना नीचे गिरा दिया जिसकी कल्पना भी नहीं की जा सकती है। वैसे तो अपनी स्थापित शैली के अनुरूप चरित्र हनन के हथियार को तब से ही भाजपा इस्तेमाल कर रही है जब से राहुल जी राजनीति में आए हैं। लेकिन 2011 में यमुना एक्सप्रेसवे के लिए भूमि अधिग्रहण नीति के खिलाफ भट्टा परसौल से अलीगढ़ तक पदयात्रा और किसान हितैषी भूमि अधिग्रहण कानून बनाने के बाद उसे कॉर्पोरेट का भी पूर्ण समर्थन मिल गया। 2014 के बाद से तो झूठ, फरेब, घृणा, दुष्प्रचार सामग्री का निर्माण करने वाली फैक्ट्री ही खड़ी कर दी गई। मीडिया और भाजपा के सायबर क्रिमिनल आईटी सेल के बीच अंतर खत्म हो गया। राहुल गांधी की छवि को धूमिल करने के लिए न जाने कितने फेक व भ्रामक वीडियो और मीम्स बनाए गए। उनके कई भाषणों के वीडियोज को काट-पीटकर आधा-अधूरा करके चलाया गया। बीजेपी ने हर तरह से राहुल गांधी को 'पप्पू' की छवि बनाने का प्रयास किया। जिसमें उसे मीडिया का पूरा साथ मिला। उनके व्यक्तित्व को खराब करने के लिए अरबों रुपये खर्च किए गए, उनकी संसद सदस्यता को गलत तरीके से रद्द किया गया, सरकारी आवास खाली करवाया गया, उनकी सुरक्षा व्यवस्था को कमतर किया गया। राहुल को भयभीत करना और उनके आत्मबल को तोड़ना इन सब कोशिशों का लक्ष्य था। राहुल के टूटने का अर्थ था कांग्रेस का कमजोर होना और कांग्रेस की निर्बलता का अर्थ था भाजपा का विपक्ष और विकल्पविहीन एकछत्र राज्य स्थापित होना। अफसोस भाजपा को इन सब कुकृत्यों और षड्यंत्रों के बावजूद सफलता नहीं मिल सकी। इसका नतीजा 2024 के लोकसभा चुनावों में देखने को मिल गया। जहां 400 पार का सपना पाले बीजेपी को राहुल गांधी ने 272 तक से नीचे रोक दिया। बीजेपी के इन प्रयासों से राहुल गांधी बिल्कुल नहीं टूटे। मुख्यधारा के मीडिया के कैमरे और कलम से के विपरीत वे आम हिंदुस्तानी की नजरों में सच्चे नेता के रूप में चढ़ते गए। 2024 के लोकसभा चुनाव के दौरान भारत की गरीब जनता ने जो समर्थन राहुल गांधी को दिया है, उसने राहुल गांधी को आज देश का एक मजबूत नेता व शख्सियत बनाकर खड़ा कर दिया है।

राहुल के 'जनयंत्र' से टूटा सत्ता का दमन तंत्र

चुनावों में स्थिति ये थी कि एक ओर हर तरह की ताकत से लैस नरेंद्र मोदी और भाजपा थी। तो दूसरी तरफ हर तरह की मुश्किलों, अभावों और कठिनाइयों से घिरे राहुल गांधी और कांग्रेस पार्टी। सरकार ने कांग्रेस को नष्ट करने में पूरी ताकत लगा दी। सरकारी एजेंसियों के सहारे कांग्रेस की जड़ें खोदी गईं। यहां तक कि कांग्रेस पार्टी के बैंक खाते को सीज कर दिया गया। यूं कहें कि लोकतंत्र का 'लोक' तो राहुल गांधी के साथ था। पर पूरा 'तंत्र' नरेंद्र मोदी के साथ। राहुल गांधी ने लोकशक्ति को जगाया और वंचितों की वह सेना खड़ी की जिसने तंत्र को हिला दिया और अपनी शक्ति का फिर से आभास करा दिया। राहुल गांधी को भारत की दलित, पिछड़ी, आदिवासी, गरीब जनता, बेरोजगार युवाओं और छोटे कारोबारियों का पूरा साथ मिला। संविधान बचाने के लिए राहुल ने देश की साधारण जनता को आवाज दी। महात्मा गांधी की तरह भारत को पहचानने के लिए राहुल गांधी ने भारत जोड़ो यात्रा की। इस यात्रा ने पूरी दुनिया के लोकतंत्र समर्थकों को प्रेरित किया। साथ ही राहुल भी आमजन के बीच पहुंचे, उनसे मिले। जिसने राहुल की सोच और उनकी छवि को काफी हद तक बदल कर रख दिया। स्वतंत्र भारत में पहली बार राहुल गांधी ने इस चुनाव के विमर्श को पूर्णतः वैचारिक और सैद्धांतिक बनाया। मोदी हिन्दू-मुस्लिम और मंगलसूत्र जैसे बेसिर-पैर के मुद्दे पर चुनाव लड़ना चाहते थे। लेकिन राहुल गांधी उन्हें घसीटकर संविधान, सामाजिक न्याय, जातिगत जनगणना और आरक्षण के ठोस और सैद्धांतिक मुद्दों पर लाते रहे। यह उनकी राजनीतिक परिपक्वता का प्रमाण है कि उन्होंने भांप लिया था कि संविधान रक्षा एक बहुत बड़ा मुद्दा बन सकता है। सामाजिक न्याय को लेकर विधानसभा के चुनाव भले ही हुए हों मगर लोकसभा चुनावों में यह पहला मौका है जब यह मुद्दा प्रमुखता से उठा। इस बार यह मुद्दा किसी तरह का प्रतिपक्ष नहीं गढ़ पाया। राहुल गांधी ने इस बार सामाजिक न्याय में ही सरकारी नौकरियों को सृजित करने और बचाने की मुहिम भी जोड़ी। संदेश यही गया कि जब सरकारी नौकरी होगी ही नहीं तो किसी भी तरह के आरक्षण का कोई मतलब नहीं रह जाएगा। राहुल गांधी ने सामाजिक न्याय को विस्तार देते हुए पांच तरह के न्यायों को जोड़ा। उन्होंने 'पांच न्याय' की बात की जिनका स्वरूप दूरगामी था। उनका सर्वाधिक जोर संविधान को बचाने पर था। संविधान की एक प्रति लेकर वे हर जगह गए। अपने प्रत्येक भाषण में उन्होंने संविधान को दिखाया और अपील की कि इसे बचाना है।

Sanjay Sharma

editor.sanjaysharma

@Editor_Sanjay

जिद... सच की

मजबूत विपक्ष बनाएगा मजबूत लोकतंत्र !

कहा जाता है कि एक मजबूत लोकतंत्र के लिए एक मजबूत विपक्ष का होना काफी आवश्यक होता है। दुनिया के सबसे बड़ा लोकतांत्रिक देश में पिछले दस साल से इस कथन पर अमल नहीं हो पा रहा था। यही कारण था कि इतने बड़े लोकतांत्रिक देश में भी लोकतंत्र पिछले दस सालों से वेंटिलेटर पर रखा हुआ सांसे भर रहा था। लेकिन अब ये कथन चरितार्थ होता दिख रहा है कि एक मजबूत विपक्ष, मजबूत लोकतंत्र के लिए कितना जरूरी होता है। नई सरकार का गठन हुए अभी दो हफ्ते से एक-दो दिन ज्यादा ही बीते हैं। इस समय 18वीं लोकसभा का पहला सत्र भी चल रहा है। इन 15 दिनों और पहले सत्र के शुरूआती दो दिनों में ही विपक्ष की जो ताकत देखने को मिली है, वो पिछले पूरे दो कार्यकालों के दौरान नहीं देखने को मिली। इसकी एकमात्र वजह है कि इस बार विपक्ष का मजबूत होना और उसके पास एक मजबूत संख्याबल का होना। यही कारण है कि 18वीं लोकसभा में सदन के अंदर का माहौल पिछले दो कार्यकालों से बदला नजर आ रहा है।

एक दमदार व मजबूत विपक्ष की ही ताकत है कि पहले जहां विपक्ष ने प्रोटेम स्पीकर के पद को लेकर जबरदस्त विरोध दर्ज कराया और अपनी बात रखी। वहीं जब लोकसभा अध्यक्ष के पद की बारी आई तो विपक्ष डिप्टी स्पीकर के पद पर अड़ गया। सत्ता पक्ष की ओर से आपसी सहमति की बात करने के बाद विपक्ष ने लोकसभा अध्यक्ष के मुद्दे पर आपसी सहमति की हामी भरी, लेकिन अक्सर संविधान को ताक पर रखने वाले पीएम मोदी ने एक बार फिर कायदे की बात से किनारा करते हुए डिप्टी स्पीकर का पद विपक्ष को देने पर राजी होने से इंकार कर दिया। नतीजतन विपक्ष ने भी लोकसभा अध्यक्ष के लिए आपसी सहमति से इंकार कर दिया और अपना उम्मीदवार उतार दिया। जिसके चलते देश में पहली बार लोकसभा अध्यक्ष का चुनाव हुआ। बेशक संख्या बल में विपक्ष सरकार से पीछे है, इसलिए नतीजा पहले से ही तय है। लेकिन खुद के मजबूत होने का एहसास दिलाने के लिए विपक्ष ने कदम उठाया। परिणाम जो भी रहे हों, लेकिन विपक्ष के इस कदम की सराहना की जानी चाहिए। ये तभी संभव हो पाया है जब विपक्ष के पास एक मजबूत संख्या बल है, वर्ना अगर पिछले दो कार्यकालों वाला विपक्ष होता तो शायद वो ये कदम उठाने की जेहमत कभी नहीं कर पाता। इसीलिए ये कहा जाता है कि एक मजबूत लोकतंत्र के लिए मजबूत विपक्ष का होना अत्यंत आवश्यक है। वो कहते हैं न कि पूत के पांव पालने में ही दिख जाते हैं। ऐसे में जिस तरह से विपक्ष ने संसद के पहले सत्र के शुरूआती दिनों में ही जो ताकत दिखाई है, उससे ये साफ जाहिर हो गया है कि अबकी पूरे पांच साल पिछले 10 सालों से काफी अलग होंगे और विपक्ष इस बार बायकॉट नहीं, बल्कि संवाद व सवाल करेगा।

“ नई सरकार का गठन हुए अभी दो हफ्ते से एक-दो दिन ज्यादा ही बीते हैं। इस समय 18वीं लोकसभा का पहला सत्र भी चल रहा है। इन 15 दिनों और पहले सत्र के शुरूआती दो दिनों में ही विपक्ष की जो ताकत देखने को मिली है, वो पिछले पूरे दो कार्यकालों के दौरान नहीं देखने को मिली। इसकी एकमात्र वजह है कि इस बार विपक्ष का मजबूत होना और उसके पास एक मजबूत संख्याबल का होना।

(इस लेख पर आप अपनी राय 9559286005 पर एसएमएस या info@4pm.co.in पर ई-मेल भी कर सकते हैं)

वे बच्चे जो कभी घर नहीं लौट पाते

क्षमा शर्मा

हाल ही में दिल्ली पुलिस ने चौदह साल से कम उम्र के तेईस खोए हुए बच्चों को उनके माता-पिता से मिलवाया है। पुलिस ने बच्चों की काउंसलिंग भी की। पता चला कि वे घर का रास्ता भटककर खो गए थे। इनमें से कई बच्चे घर से बाहर खेलने के लिए गए थे। कई दुकानों से सामान लाने गए थे और रास्ता भूल गए थे। कई बच्चे ऐसे भी थे जो ठीक से बोल नहीं पाते थे। पुलिस ने बताया कि इन बच्चों को अपने घर का पता नहीं मालूम था। न ही वे ये बता सकते थे कि उनके घर के आसपास ऐसी कौन-सी मशहूर जगह या लैंडमार्क है जहां पहुंचकर घर जाया जा सके। पुलिस को पता चला कि घर वालों ने कभी इस ओर ध्यान ही नहीं दिया था कि बच्चों को घर का पता याद होना जरूरी है। अब पुलिस माता-पिता को इस बारे में शिक्षित कर रही है कि वे बच्चों को अपने घर का पता, टेलीफोन नम्बर आदि जरूर याद कराएं। उनके कपड़ों में घर का पता और फोन नम्बर लिखकर हमेशा रख दें जिससे अगर वे रास्ता भूल भी जाएं तो कोई उन्हें घर पहुंचा दे।

पुलिस के पास आएं तो पुलिस को भी बच्चों को घर लाने में आसानी हो। दिल्ली पुलिस ने ऐसे सोलह बच्चों को भी ढूंढ़ निकाला जिन पर इनाम घोषित था। पैंतालीस ऐसे बच्चों को भी उनके घर पहुंचाया गया, जो परीक्षा में अच्छा नहीं कर पाते थे, इस वजह से घर वालों की डांट खाते थे। इसलिए वे बिना बताए घर से चले गए थे। बच्चों का खोना या हाट, मेले में घर वालों से बिछुड़ना कोई नई बात नहीं है। इस विषय पर बहुत-सी फिल्में भी बन चुकी हैं। बचपन में इसीलिए अक्सर घर वाले घर से बाहर तभी जाने देते थे, जब घर का कोई बड़ा साथ हो। दरअसल, बच्चे चुराने वाले गिरोह भी सक्रिय रहते थे, जो आज भी रहते हैं। इसके अलावा अड़ोस-पड़ोस भी आज की तरह कोई बेगाना नहीं था। हर कोई एक-दूसरे के परिवार वालों को जानता था, इसलिए बच्चे सुरक्षित भी रहते थे। बचपन बचाओ आंदोलन की रिपोर्ट 'मिसिंग चिल्ड्रन आफ इंडिया' के अनुसार अपने देश में हर साल छियानवे हजार बच्चे खो जाते हैं, जिनमें से इकतालीस हजार, पांच सौ छियालीस बच्चे कभी नहीं मिलते।

संगठन का कहना है कि भारत में हर घंटे ग्यारह बच्चे खो जाते हैं। इनमें से चार का पता कभी नहीं चलता। भारत के छह सौ चालीस जिलों में से तीन सौ बानवे जिलों में जनवरी, 2008 से जनवरी, 2010 में खोए हुए बच्चों का

अध्ययन किया गया था। उसी के आधार पर यह रिपोर्ट तैयार की गई थी। इसमें सबसे गम्भीर बात यह बताई गई थी कि खोए हुए बच्चे या तो बंधुआ मजदूरी का काम करते हैं या तरह-तरह से उनका यौन शोषण किया जाता है। महाराष्ट्र और पश्चिम बंगाल से सबसे ज्यादा बच्चे खोते हैं। क्राई संस्था का भी कहना है कि भारत में बड़ी संख्या में बच्चे लापता हो जाते हैं। 2011 में पहले चार महीनों में ही बारह सौ साठ बच्चे लापता हो गए थे। इन खो जाने वाले सत्तर फीसदी बच्चों की उम्र बारह से अठारह साल के बीच होती है। इनमें से रिपोर्ट्स के अनुसार ही हजारों बच्चे अपने घर कभी लौट ही नहीं पाते। बच्चों के लिए काम करने वाले संगठनों को पुलिस के रवैये से भी नाराजगी है। उनका कहना है कि पुलिस अक्सर खोए हुए बच्चों की रिपोर्ट ही नहीं लिखती। हालांकि, यह भी सच है कि अनेक मामलों में पुलिस बच्चों को ढूंढ़ती भी है। दिल्ली में खोए हुए बच्चों को उनके माता-पिता से मिलाने के लिए 'आपरेशन मिलाप' नामक कार्यक्रम भी चलाया जाता है। इस लेख की शुरुआत में पुलिस द्वारा खोए बच्चों का जिक्र है। यह भी कि उनमें से बहुत से बच्चों को अपने घर का पता या लैंडमार्क ही नहीं मालूम होता। इसके लिए पुलिस अभिभावकों के लिए जागरूकता अभियान भी चलाती है। पुलिस का कहना है कि अपने बच्चों को घर का पता ठीक से याद कराएं। हो सके तो फोन नम्बर भी उन्हें याद करा दें। जो बच्चे ठीक से बोल नहीं पाते जब भी वे घर से बाहर जाएं, उनके कपड़ों पर घर का पता और फोन नम्बर लिख कर हमेशा रख दें। वर्ष 2023 में मुम्बई पुलिस ने 'आपरेशन मुस्कान' के तहत आठ महीनों में पचास हजार खोए हुए बच्चों का पता लगाया था। पुलिस ने यह भी बताया था कि इन बच्चों के खोने के बड़े कारणों में पढ़ाई पर ध्यान न देना, मोबाइल का अधिक प्रयोग, गरीबी से बचने की चाहत, फिल्मों में काम करने की इच्छा, प्रेम-संबंध, माता-पिता से झगड़ा आदि शामिल हैं।

साथ ही कई बार बच्चे उन लोगों से मिलने के लिए घर से भाग जाते हैं, जिनसे सोशल मीडिया पर चैट तो करते हैं मगर उनसे मिले भी नहीं होते। आजकल सोशल इनफ्लुएंसर बनने के चक्कर में भी बच्चे घर से भाग रहे हैं। न जाने कितने माता-पिता ऐसे होते हैं, जो जीवन अपने खोए हुए बच्चों के इंतजार में गुजार देते हैं कि शायद एक दिन ऐसा हो कि बच्चा वापस आ जाए। कई बार बीस, बीस साल बाद बच्चे किसी सुखद संयोग के कारण माता-पिता के पास लौटते हैं।

समावेशी हो कृत्रिम मेधा का नया रचनात्मक युग

सुरेश सेठ

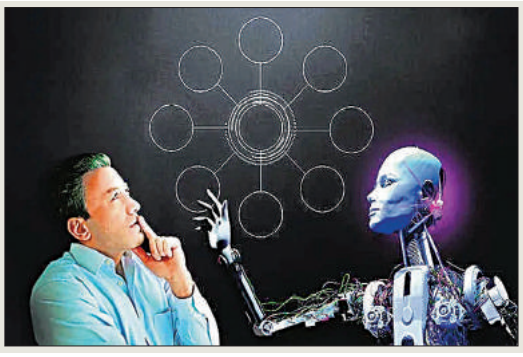

रोबोट हो या कृत्रिम मेधा, इनके प्रतिमान भारत जैसे देशों में सहयोगी हो सकते हैं, मशाल लेकर आगे-आगे चलने वाले नहीं। इसके अतिरिक्त कृत्रिम मेधा की इस तेजी से विकसित होती दुनिया में हम व्यक्ति की अभिव्यक्ति का हूबहू प्रतिरूप तो पैदा करने की कोशिश कर रहे हैं लेकिन अब अनुभव बता रहा है कि कृत्रिम मेधा की इस दुनिया में संवेदना, उत्साह, भावुकता और रिश्तों के पुलों का भी तो अपना एक महत्व है।

युग बदल गया। इंटरनैट की शक्ति 5जी और 6जी तक उड़ान भरने लगी। रोबोट्स की दुनिया तीसरी दुनिया के देशों में भी प्रवेश कर गई। जहां आबादी कम है और श्रमबल की आवश्यकता अधिक है, वहां तो रोबोट्स की यह नई दुनिया बहुत उपयोगी है। लेकिन दुनिया में भारत जैसे अत्यधिक आबादी वाले देशों को तो रोबोट्स के इस्तेमाल के बारे में कुछ नये पैमाने अपनाने पड़ेंगे। रोबोट हो या कृत्रिम मेधा, इनके प्रतिमान भारत जैसे देशों में सहयोगी हो सकते हैं, मशाल लेकर आगे-आगे चलने वाले नहीं। इसके अतिरिक्त कृत्रिम मेधा की इस तेजी से विकसित होती दुनिया में हम व्यक्ति की अभिव्यक्ति का हूबहू प्रतिरूप तो पैदा करने की कोशिश कर रहे हैं लेकिन अब अनुभव बता रहा है कि कृत्रिम मेधा की इस दुनिया में संवेदना, उत्साह, भावुकता और रिश्तों के पुलों का भी तो अपना एक महत्व है। निस्संदेह, पुतले तो राष्ट्रीयता की बात नहीं कर सकते।

कृत्रिम मेधा के प्रतिरूप कलात्मक मौलिकता की उड़ानें नहीं भर सकते। इस बात को पूरी दुनिया ने ही नहीं, तीसरी दुनिया के अग्रणी भारत जैसे देशों ने भी बड़ी शिद्दत के साथ महसूस किया है। अगर भारत को 2047 के आजादी के शतकीय उत्सव में एक विकसित राष्ट्र बनना है तो यह विकास समावेशी विकास होना चाहिए। इसका अर्थ यह है कि समाज का कोई भी वर्ग अपने आप को पिछड़ता हुआ महसूस न करे और संतुलित प्रगति के पथ पर हर कदम साथ-साथ चले। समाज के हर वर्ग को साथ लेकर चलना पड़ेगा। पिछड़े और अगड़ों की यह भावना खत्म हो और सभी एक ही धरातल पर उद्यम करते हुए जिएं। आज दुनिया में साम्राज्यवाद के खिलाफ अब तीसरी दुनिया और अफ्रीका के देश तेजी से आंखें खोल रहे हैं। भारत की अध्यक्षता में जी-20 के शिखर सम्मेलनों में अफ्रीकी संघ को स्थायी सदस्य बनाया गया। आज भारत अफ्रीका के सभी देशों के आर्थिक और सामाजिक विकास, स्थिरता और सुरक्षा में योगदान दे रहा है।

पिछले दशक में अंतर्राष्ट्रीय कूटनीति में भारत की आवाज बुलंद हुई है। इसका कारण यही है कि चाहे यह रूस और यूक्रेन का अंतहीन लगता हुआ हिंसक युद्ध हो या हमास और इसराइल का भयावह हिंसक तांडव, भारत ने हमेशा शांति और संवाद की पैरवी की है। उसका कहना गलत साबित नहीं हुआ क्योंकि जिस प्रकार दुनिया का व्यापार अस्त-व्यस्त हुआ। आपूर्ति चैनल गड़बड़ा गए और मानवता की बेचारगी सबके सामने स्पष्ट हो गई, वह यही कह रही थी कि भारत की आवाज सही थी और युद्धोन्माद में हथियार संपन्न व्यवसायी देशों द्वारा हथियार बेचने की ललक गलत है। जी-7 सम्मेलन से भारत के प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी ने एक नई आवाज उठाई है।

उन्होंने यह कहा है कि हम समाज के हर वर्ग के विकास को मुख्यधारा से जोड़ने को प्राथमिकता दे रहे हैं। उन्होंने कृत्रिम मेधा के महत्व को नकारा नहीं और कहा कि इतने बड़े देश के लोकतांत्रिक चुनावों में अगर हम कुछ घंटों में ही निष्पक्ष और तटस्थ चुनाव परिणाम दे पाए तो यह कृत्रिम मेधा की शक्ति का ही परिणाम है। लेकिन गड़बड़ वहां हो जाती है जहां समर्थ और संपन्न अपनी वैज्ञानिक और अन्वेषक शक्ति के कारण कृत्रिम मेधा से लेकर रोबोटिक युग तक अपना एकाधिकार जमा लें। जहां तक कृत्रिम मेधा का संबंध है, उसके साथ डीपफेक की जो शक्ति विकसित हो गई है, जिसमें आप किसी भी युग, किसी भी व्यक्ति को न केवल हूबहू साकार कर सकते हैं, बल्कि उसके मुंह में अपना बयान डाल सकते हैं। इसलिए जिंदगी में सही क्या है और गलत क्या है, इसकी पहचान करना और भी कठिन हो गया है।

इसका उत्तर यही है कि अगर कृत्रिम मेधा की यह शक्ति रचनात्मकता और मौलिकता का दामन नहीं छोड़े, मानवीय संवेदनाओं को कृत्रिम मेधा के इस्तेमाल से मौलिकता का एक नया रंग दे तो भारत में जय जवान, जय किसान और जय अनुसंधान का जो नारा आपने विकास के लिए दे रखा है, उसमें अनुसंधान को नई मंजिलें तय करते देर नहीं लगेगी। लेकिन याद रखा जाए कि ये मंजिलें निर्माणात्मक होनी चाहिए। मानवीय संवेदना और मानवीय आदर्शों का परिवर्धन करने वाली होनी चाहिए। भारत ने घोषणा की है कि वह कृत्रिम बुद्धिमत्ता पर राष्ट्रीय रणनीति तैयार करने वाले पहले कुछ देशों में से एक है और भारत का नया नारा है 'एआई फॉर ऑल' अर्थात कृत्रिम मेधा सबके लिए। इस कृत्रिम मेधा को पारदर्शी, निष्पक्ष, सुरक्षित, सुलभ और जिम्मेदार बनाया जाए, इसके लिए सबको मिलजुल कर काम करना होगा। बेशक पर्यावरण प्रदूषण के क्षेत्र में 2070 तक भारत नेट जीरो के लक्ष्य को हासिल करने का हरसंभव प्रयास करेगा और आने वाले समय को हरित युग बनाया जाएगा जहां एक समावेशी प्रयास में जुटे हुए सब देश होंगे और संपन्न देश भी अपनी स्वार्थपरता भूल कर तीसरी दुनिया के देशों के साथ हाथ से हाथ मिलाकर चलेंगे।

आत्मनिर्भर बनाएं

स्वतंत्रता का महत्व समझना बहुत जरूरी है साथ ही कुछ चीजों में बच्चों को बचपन से ही आत्मनिर्भर बनाना भी बहुत जरूरी है। अगर वो सक्षम हैं, तो उन्हें खुद से खाने दें। कई बार लाड के चक्कर में मां-बाप बच्चों के बड़े होने पर भी उन्हें बहुत ज्यादा पैंपर करते हैं, जो उनके लिए सही नहीं होता। यदि आप बच्चों को आत्मनिर्भर बनाना चाहते हैं तो ऐसे में आप उन्हें खुद का काम करने दें। क्योंकि यदि आप उनका काम स्वयं करेंगे तो उन्हें इस चीज की आदत हो जाएगी और भविष्य में यह दिक्कत पैदा कर सकती है। उदाहरण के तौर पर कमरे की सफाई, समान का ध्यान रखना, अपने कपड़ों को खुद फोल्ड करके रखना आदि। अक्सर माताएं जब खाना बनाती हैं तो वे अपने बच्चे को रसोई में आने भी नहीं देतीं।

बड़ों का सम्मान करना सिखाएं

बच्चों को बाहर ही नहीं घर में भी बड़े- बुजुर्गों का सम्मान करना सिखाएं। बड़ों को मिलने पर उनके सामने अच्छा व्यवहार करें और उनकी बातें सुनें।

दूसरों का साथ देना

छोटे बच्चों को सिखाएं कि अगर वो इस काबिल हैं कि अपने आसपास के लोगों की मदद कर सके, तो कभी भी इसमें पीछे न हटें। इससे जो इमोशन डेवलप होता है, वो उन्हें आगे भी बहुत काम आता है। साथ ही वो टीम की तरह काम करना भी सिखते हैं।

बच्चों को सिखाएं ये बातें

बच्चे समाज में कैसा व्यवहार करते हैं इसका पूरा श्रेय और दोष मां-बाप को ही दिया जाता है। कुछ गलत करते हैं तो लोग कहते हैं कि मां-बाप ने कुछ सिखाया ही नहीं और कई बार तो ये ताने बड़े होने के बाद भी सुनने को मिलते हैं। कुछ बातें बच्चों को बचपन में ही सिखाने की जरूरत होती है जो आपकी अच्छी परवरिश को दर्शाते हैं। बच्चे स्कूल, समाज में कैसा बर्ताव करते हैं, ये काफी हद तक आपके परवरिश की पोल खोलता है। बच्चे तो शैतानी करेंगे ही, लेकिन अगर बच्चा बत्तमीज है, तो इस चीज को बाहर वाले सबसे पहले नोटिस करते हैं। खैर इसे इग्नोर भी नहीं करना चाहिए क्योंकि बत्तमीजियों पर समय रहते लगाम लगाना जरूरी होता है। इग्नोर करने या लाड-प्यार के चक्कर में आप बच्चे का बहुत बड़ा नुकसान कर रहे होते हैं, ये जान लें। बहुत छोटी-छोटी चीजें हैं, जिनके बारे में बच्चों को बचपन से ही बताना चाहिए।

हर कोई करेगा आपकी परवरिश की तारीफ

शेयरिंग इज केयरिंग

छोटे बच्चों को एक-दूसरे के साथ अपना सामान बांटने और उनके साथ मिल-जुलकर रहने की आदत सिखाएं। ऐसा करने से बच्चे दूसरे बच्चों के साथ खुश रहना सीखते हैं और उनमें भेदभाव की भावना भी नहीं आती।

शेयरिंग की आदत बच्चों को दो साल की उम्र के बाद से सिखानी चाहिए। दो साल की उम्र के बाद वाले बच्चे ही किसी के साथ अपनी चीजों को बांटने के लिए तैयार होते हैं। चार-पांच साल की उम्र में शेयरिंग की यह आदत पूरी तरह से विकसित हो जाती है।

लोगों का अभिवादन करना सिखाएं

लोगों से मिलकर उनका अभिवादन करना अच्छा बिहेवियर माना जाता है, तो ये आदत अपने बच्चों में भी डालें। बच्चे जब लोगों का अभिवादन करना सीख जाते हैं, तो इससे उनकी पर्सनैलिटी में भी अच्छे बदलाव देखने को मिलते हैं। बड़ों से लेकर बच्चे तक उन्हें ज्यादा प्यार करते हैं।

हंसना मना है

पत्नी- हम कहां जा रहे हैं? पति- लॉन्ग ड्राइव पर.. पत्नी- तुमने मुझे पहले क्यों नहीं बताया? पति- मुझे भी अभी-अभी पता चला, जब ब्रेक फेल हो गए!

टीचर ने पूछा- क्लास में लड़ाई क्यों नहीं करनी चाहिए..? छात्र- क्योंकि पता नहीं परीक्षा में किसके पीछे बैठना पड़ जाए। टीचर बेहोश...

सेल्समैन- सर कॉकरोच के लिए पाउडर लेंगे क्या? पप्पू- नहीं हम कॉकरोच को इतना लाड़-प्यार नहीं करते..! आज पाउडर लगा देंगे तो कल हो सकता है परफ्यूम मांगे...!!! सेल्समैन बेहोश...

कंजूस महिला दुकानदार से- ऐसा साबुन दो जो कम घिसे और नहाने के बाद चेहरे पे लाली लाए... दुकानदार नौकर से- मैडम को एक ईंट का टुकड़ा दे दो...!

लड़का लड़की होटल में गए... वेटर- मैम आप क्या लेंगी? लड़की- मिर्च वाला घेवर..! वेटर- क्या...? लड़की- बोला न मिर्च वाला घेवर...! वेटर (हैरानी से)- क्या...? लड़का- अरे भाई गांव की है, तू टेंशन मत ले, पिज्जा मांग रही है!

कहानी | मूर्ख बगुला और नेवला

कई सालों पहले की बात है, एक जंगल में एक बरगद का पेड़ था। उस बरगद के पेड़ पर एक बगुला रहा करता था। उसी पेड़ के नीचे एक बिल में एक सांप भी रहता था। वह सांप बड़ा ही दुष्ट था। अपनी भूख मिटाने के लिए वह बगुले के छोटे-छोटे बच्चों को खा जाया करता था। इस बात से बेचारा बगुला बहुत परेशान था। एक दिन की बात है, सांप की हरकतों से परेशान होकर बगुला नदी के किनारे जाकर बैठ गया। बैठे-बैठे अचानक उसकी आंखों में आंसू आ गए। बगुले को रोता देख नदी में से एक केकड़ा बाहर आया और बोला, अरे बगुला भैया, क्या बात है? यहां बैठे-बैठे आंसू क्यों बहा रहे हो? क्या परेशानी है? केकड़े की बात सुनकर बगुला बोला, क्या बताऊं केकड़े भाई, मैं तो उस सांप से परेशान हो गया हूं। वह बार-बार मेरे बच्चों को खा जाता है। घोंसला चाहे जितना भी ऊपर बनाऊं, वह ऊपर चढ़ ही जाता है। अब तो उसके कारण दाना पानी लेने के लिए घर से कहीं जाना भी मुश्किल हो गया है। तुम ही कोई उपाय बताओ। बगुले की बात सुनकर केकड़े ने सोचा कि बगुला भी तो अपना पेट भरने के लिए उसके परिवार वालों और दोस्तों को खा जाता है। क्यों न ऐसा कोई उपाय किया जाए कि सांप के साथ साथ बगुले का भी खेल खत्म हो जाए। तभी उसे एक उपाय सूझा। उसने बगुले से कहा, एक काम करो बगुला भैया। तुम्हारे पेड़ से कुछ ही दूर नेवले का बिल है। तुम सांप के बिल से लेकर नेवले के बिल तक मांस के टुकड़े बिछा दो। नेवला जब मांस खाते हुए सांप के बिल तक आएगा तो वह सांप को भी मार देगा। बगुले को यह उपाय सही लगा और उसने ठीक वैसा ही किया जैसा केकड़े ने कहा, लेकिन इसका परिणाम उसे भी भुगतना पड़ा। मांस के टुकड़े खाते-खाते जब नेवला पेड़ के पास आया तो उसने सांप के साथ बगुले को भी अपना शिकार बना लिया।

7 अंतर खोजें

पंडित संदीप आत्रेय शास्त्री

जानिए कैसा रहेगा कल का दिन

लेखक प्रसिद्ध ज्योतिषविद हैं। सभी प्रकार की समस्याओं के समाधान के लिए कॉल करें-9837081951

मेष

एकाएक स्वास्थ्य खराब हो सकता है, लापरवाही न करें। दूर से दुःखद समाचार प्राप्त हो सकता है। व्यर्थ दौड़धूप होगी। विवाद से स्वाभिमान को चोट पहुंच सकती है।

वृषभ

प्रयास सफल रहेंगे। सामाजिक प्रतिष्ठा में वृद्धि होगी। नौकरी में कार्य की प्रशंसा होगी। व्यापार-व्यवसाय मनोनुकूल लाभ देगा। लाभ देगा।

मिथुन

फिजूलखर्ची ज्यादा होगी। शत्रु भय रहेगा। शारीरिक कष्ट से बाधा उत्पन्न होगी। दूर से शुभ समाचार प्राप्त होंगे। आत्मविश्वास में वृद्धि होगी। नए काम करने का मन बनेगा।

कर्क

अप्रत्याशित लाभ हो सकता है। रोजगार प्राप्ति के प्रयास सफल रहेंगे। व्यावसायिक यात्रा लाभदायक रहेगी। निवेश शुभ रहेगा। नौकरी में अधिकार बढ़ने के योग हैं।

सिंह

कोई बड़ा खर्च एकाएक सामने आएगा। कर्ज लेना पड़ सकता है। कुसंगति से बचें। किसी व्यक्ति के काम की जवाबदारी न लें। स्वयं के काम पर ध्यान दें।

कन्या

घर के छोटे सदस्यों संबंधी चिंता रहेगी। व्यावसायिक यात्रा सफल रहेगी। बकाया वसूली के प्रयास सफल रहेंगे। लाभ के अवसर हाथ आएंगे।

तुला

नई योजना बनेगी। कार्यप्रणाली में सुधार होगा। सामाजिक प्रतिष्ठा में वृद्धि होगी। सुख के साधन जुटेंगे। लाभ के अवसर हाथ आएंगे। व्यवसाय लाभदायक रहेगा।

वृश्चिक

वैवाहिक प्रस्ताव मिल सकता है। शारीरिक कष्ट संभव है। अज्ञात भय सताएगा। चिंता तथा तनाव रहेंगे। तंत्र-मंत्र में रुचि जागृत होगी।

धनु

स्वास्थ्य का पाया कमजोर रहेगा। वाहन, मशीनरी व अग्नि आदि के प्रयोग में सावधानी रखें। विवाद से क्लेश हो सकता है। लेन-देन में जल्दबाजी न करें।

मकर

कानूनी अड़चन दूर होकर स्थिति अनुकूल बनेगी। व्यावसायिक यात्रा सफल रहेगी। प्रेम-प्रसंग में अनुकूलता रहेगी। कोई ऐसा कार्य न करें जिससे कि अपमान हो।

कुम्भ

नौकरी में अधिकार मिल सकते हैं। सुख के साधन जुटेंगे। भूमि व भवन संबंधी योजना बनेगी। बड़े सौदे बड़ा लाभ दे सकते हैं। उन्नति के मार्ग प्रशस्त होंगे।

मीन

विवेक का प्रयोग करें। समस्याएं कम होंगी। शारीरिक कष्ट संभव है। अज्ञात भय रहेगा। यात्रा मनोरंजक रहेगी। स्वादिष्ट भोजन का आनंद प्राप्त होगा।

बॉलीवुड | मन की बात

अनन्या पांडे के पिता का किरदार निभाना चाहते हैं करण जौहर

फिल्ममेकर करण जौहर को अभिनय करने में शुरुआत से ही दिलचस्पी रही है। हाल ही में उन्होंने अभिनय को लेकर अपनी इच्छा पर बात की है। उन्होंने कहा कि वह एक फिल्म में अनन्या पांडे के पिता की भूमिका निभाने के लिए तैयार हैं। करण ने लगभग 25 वर्षों के काम के बाद खुद को एक सफल फिल्म निर्माता के रूप में स्थापित किया है। उन्होंने बॉम्बे वेलवेट के साथ अभिनय में भी हाथ आजमाया, मगर इसके बाद उन्होंने फिल्मों में अभिनय नहीं किया। करण जौहर ने एक बातचीत के दौरान कहा, मैं दिल से कह रहा हूं, मैं आपको नहीं बता सकता, उस फिल्म के बाद मुझे एक भी ऑफर नहीं मिला। मुझे लगा कि उस फिल्म के बाद बहुत सारे रास्ते खुल जाएंगे और मुझे फिल्मों के लिए मना करना पड़ेगा। मैं अपनी कंपनी में अपने नाम का सुझाव देने की कोशिश करता हूं। मैं कहता हूं कि यह किरदार बहुत दिलचस्प है, काश इसे मैं निभा पाता, तो निर्देशक विषय बदल देते हैं। उन्होंने कहा, मुझे वाकई बहुत अच्छे रिव्यू मिले। मैं अपनी तारीफ कर रहा हूं, क्योंकि असल में ऐसा कुछ नहीं हुआ। मुझे कोई बुरी फिल्म भी ऑफर नहीं हुई। मैं वाकई कास्टिंग डायरेक्टर्स से यही कहना चाहूंगा कि मैं वाकई खुद को सुधारना चाहता हूं। मुझे बॉम्बे वेलवेट और इसके प्रयासों पर बहुत गर्व है। मगर मैं एक बड़ा किरदार करना चाहूंगा। प्लीज मुझे कोई भी रोल दें। करण ने कहा, मुझे पता है कि मेरे पास लीड रोल करने के लिए जरूरी योग्यता नहीं है, लेकिन मुझे लेने पर विचार करें। मैं अनन्या पांडे के पिता का रोल करूंगा। मैं उस मुकाम पर पहुंच गया हूं, जहां उम्र कोई बाधा नहीं है। यह एक अहम किरदार है, एक सहायक का किरदार है। मैं इसे करने के लिए तैयार हूं। मैं खुद इसे प्रोड्यूस नहीं करना चाहता क्योंकि इससे मेरी विश्वसनीयता खत्म हो जाएगी। मैं वाकई एक्टिंग करना चाहता हूं।

6 सितंबर को रिलीज होगी इमरजेंसी

कंगना ने शुरू किया फिल्म पर काम

भारत में लागू हुए 1975 के आपातकाल की कहानी लेकर आ रही इस फिल्म में कंगना ने पूर्व प्रधानमंत्री इंदिरा गांधी का किरदार निभाया है। इस फिल्म में एक्टिंग करने के साथ-साथ उन्होंने इसे डायरेक्ट भी किया है। अब कंगना ने कई बार टल चुकी अपनी इस फिल्म की नई रिलीज डेट अनाउंस कर दी है। अब सांसद बन चुकीं, एक्ट्रेस ने अपने फैन्स के लिए एक बड़ी खबर शेयर की है। कंगना ने इंस्टाग्राम पोस्ट में लिखा, स्वतंत्र भारत के सबसे डार्क चैप्टर का 50वां साल शुरू होने पर, पेश है कंगना रनौत की इमरजेंसी, 6 सितंबर 2024 को सिनेमा में। भारतीय लोकतंत्र के इतिहास में सबसे विवादित एपिसोड। इमरजेंसी की सबसे पहली रिलीज डेट 24 नवंबर, 2023 अनाउंस की गई थी। लेकिन बाद में इसे 14 जून 2024 के लिए शेड्यूल किया गया। कंगना के चुनाव में खड़े होने की वजह से फिल्म को एक बार फिर टाल दिया गया। अब कंगना ने फाइनली इसे सितंबर के लिए अनाउंस किया है। इमरजेंसी में जहां कंगना, इंदिरा गांधी का किरदार निभा रही हैं, वहीं उनके साथ अनुपम खेर भी हैं। वो फिल्म में पॉलिटिशियन जयप्रकाश नारायण का किरदार निभा रहे हैं। इंदिरा गांधी की सलाहकार पुपुल जयकार के रोल में महिमा चौधरी हैं और मिलिंद सोमन, फील्ड मार्शल सैम मानेकशॉ का किरदार निभा रहे हैं। बतौर डायरेक्टर कंगना ने इससे पहले फिल्म मणिकर्णिका डायरेक्ट की थी। रानी लक्ष्मीबाई की बायोपिक में कंगना ने लीड रोल भी निभाया था। ये फिल्म बॉक्स ऑफिस पर तो कामयाब थी ही, इसमें कंगना के काम की भी काफी तारीफ हुई थी। इस फिल्म के लिए कंगना को बेस्ट एक्ट्रेस का नेशनल अवॉर्ड भी मिला था। कंगना ने जब इमरजेंसी अनाउंस की थी, तब वो केवल एक्ट्रेस थीं। लेकिन फिल्म के बनकर रिलीज होने के बीच अब वो खुद एक पॉलिटिशियन बन चुकी हैं। ऐसे में ये देखना इंटरेस्टिंग होगा कि कंगना की ये फिल्म थिएटर्स में क्या कमाल कर पाती है।

महाराज को मिल रही प्रशंसा से खुश हुए जुनैद

बोले- अंत भला तो सब भला

ऐतिहासिक ड्रामा फिल्म महाराज तमाम बधाओं के पार पाते हुए बीते शुक्रवार यानी 21 जून को रिलीज हो गई। इस फिल्म से आमिर खान के बेटे जुनैद खान ने हिंदी फिल्म इंडस्ट्री में बतौर अभिनेता अपनी शुरुआत कर दी है। नेटफ्लिक्स पर इन दिनों यह फिल्म स्ट्रीम हो रही है। फिल्म को दर्शकों की जबर्दस्त सकारात्मक प्रतिक्रिया मिली है। दर्शक जुनैद के अभिनय की जमकर तारीफ कर रहे हैं। लोगों से मिल रहे प्यार पर अब जुनैद ने भी अपनी भावनाएं साझा की हैं। उन्होंने एएनआई से बातचीत में कहा, महाराज को मिली सकारात्मक प्रतिक्रिया के लिए बहुत मैं आभारी हूं। यह काफी संतोषजनक है। मुझे लगता है कि अंत भला तो सब भला। स्क्रिप्ट की तारीफ करते हुए अभिनेता ने साझा किया कि जब फिल्म के निर्देशक सिद्धार्थ पी मल्होत्रा और निर्माता आदित्य चोपड़ा ने उन्हें इस कहानी के लिए बुलाया तो उन्हें यह बहुत आकर्षक लगी। जुनैद ने कहा, मुझे यह किरदार वाकई बहुत पसंद आया। यशराज बहुत बड़ा बैनर है। इसलिए इस प्रोजेक्ट को चुनना एक स्पष्ट विकल्प था। अपने पिता आमिर खान से सलाह लेने के बारे में पूछे जाने पर जुनैद ने कहा, वह आमतौर पर हमें वह सबकुछ करने देते हैं जो हम करना चाहते हैं। बहुत विशिष्ट चीजों पर ही वह सलाह देते हैं। उन्होंने कुछ महीने पहले फिल्म देखी थी और उन्हें यह काफी अच्छी लगी। महाराज की बात करें तो रिलीज से पहले यह कानूनी पचड़े में फंस गई थी। हालांकि, बाद में, गुजरात उच्च न्यायालय ने फिल्म की रिलीज पर लगी अस्थायी रोक हटा ली थी, जिसके बाद फिल्म की रिलीज का रास्ता साफ हो गया था। इस फिल्म में जयदीप अहलावत ने महाराज का किरदार निभाया है। लोगों को उनकी अदाकारी भी जमकर पसंद आ रही है। सिद्धार्थ पी मल्होत्रा के निर्देशन में बनी और वाईआरएफ एंटरटेनमेंट के बैनर तले निर्मित महाराज 1862 के महाराज मानहानि केस पर आधारित है। इसमें जुनैद खान, जयदीप अहलावत के साथ शालिनी पांडे और शरवरी वाघ भी अहम भूमिका में हैं। फिल्म की कहानी स्वतंत्रता-पूर्व भारत में 1862 में हुई सच्ची घटनाओं पर आधारित है। यह भारत के सबसे महान समाज सुधारकों में से एक, करसनदास मुलजी की कहानी बयां करती है।

अजब-गजब | भारत का रहस्यमयी समुद्र

कुछ घंटों के लिए गायब हो जाता है पानी

भारत में कई ऐसे विचित्र स्थान मौजूद हैं, जिनका रहस्य सुलझा पाना थोड़ा मुश्किल है। ऐसे ही रहस्यों में से एक है ओडिशा का चांदीपुर बीच। यह रहस्यमयी बीच चांदीपुर के छोटे से शहर में बालासोर गाँव के पास है। यह अद्वितीय है क्योंकि यहां समुद्र का पानी समय-समय पर आंखों के सामने से गायब हो जाता है और फिर कुछ समय बाद दिखाई देने लगता है। आइये जानें इस रहस्यमयी बीच से जुड़ी कुछ ख़ास बातों के बारे में।

ओडिशा की राजधानी भुवनेश्वर से कुछ ही किलोमीटर की दूरी पर स्थित यह एकांत समुद्र तट है। जहां समंदर कुछ घंटों के लिए गायब हो जाता है और फिर वापिस लौट आता है। इस बीच का नाम चांदीपुर है। इस बीच पर पहुंचने के लिए बालेश्वर या बालासोर स्टेशन पर उतरना होता है, जहां से चांदीपुर 30 किलोमीटर दूर है। बालासोर ओडिशा का एक छोटा सा शांत कस्बा है और चांदीपुर बीच इसी कस्बे में स्थित है।

हाइड एंड सीक के बीच के नाम से पॉपुलर इस बीच की गायब होने और वापस दिखाई देने की वजह से इसे लुका छिपी बीच या हाइड एंड सीक बीच भी कहा जाता है। इस चांदीपुर बीच में कैसुरीना पेड़ों, प्राचीन पानी और रसीला तटीय वनस्पति है। यहां समुद्र का पानी कम-ज्वार के दौरान 5 किलोमीटर तक दिन में दो बार, केवल गोले को पीछे छोड़ देता है। उच्च ज्वार के दौरान पानी लौटता है। इस तरह समुद्र लुका छिपी खेलता हुआ दिखाई देता है।

हर दिन होता है ऐसा

इस प्राकृतिक घटना की वजह से यह बीच काफी पॉपुलर है। जब समुद्र का पानी फिर से प्रकट होता है, तो यह अपने साथ केकड़े और लाल केकड़े लाता है। हालांकि समुद्र के पानी के गायब होने का कोई निश्चित समय नहीं है क्योंकि यह चंद्रमा चक्र पर निर्भर करता है, लेकिन यह हर दिन होता है। स्थानीय लोग निम्न और उच्च ज्वार के समय से परिचित हैं। इस समुद्र तट पर सूर्योदय और सूर्यास्त विशेष रूप से शानदार प्रतीत होता है। चाहे समुद्र का पानी दिखे या नहीं समुद्र तट खूबसूरत ही दिखता है।

यहां मेहमानों के साथ सुलाते हैं बीवी
जीवन में सिर्फ 1 दिन नहाती हैं लड़कियां

भारत ही नहीं दुनिया में कई ऐसे देश हैं जहां के अनोखे रिवाज चर्चा की विषय बने रहते हैं। कइयों पर तो भरोसा करना भी मुश्किल होता है। ऐसे ही कई परंपराए निभाई जाती है अफ्रीका की हिंबा जनजातियों के बीच। जहां, लोग मेहमानों के साथ बीवी को सुलाते है और यहां लड़कियों सिर्फ एक ही दिन नहाती हैं वो भी अपनी शादी के रोज।

अचंभवित करते हैं कई रिवाज

हिंबा जनजाति अफ्रीकी देश नामीबिया के कुनैन प्रांत में निवास करती है। ये इलाका दुनिया के सबसे सूखे इलाकों में से एक है।इसी कारण हिंबा जनजाति में कई ऐसी परंपराएं और रीति-रिवाज होते हैं जो लोगों को अचरज में डालते हैं।इनकी कई परंपराए पानी के इस्तेमाल पर निर्भर होती हैं। हिंबा जनजाति की लड़कियों के केवल एक ही दिन नहाने की परंपरा है वो भी शादी के दिन।ऐसा वहां पानी की कमी के कारण किया जाता है। हालांकि, सारी उम्र न नहीने के बाद भी इनकी महिलाओं के शरीर से बदबू नहीं आती। इसके लिए वो एक खास किस्म का पेस्ट का उपयोग करती हैं जो तेल में एक खनिज की धूल मिलाकर तैयार किया जाता है।

लेप से होते हैं कई और काम

यहां महिलाएं जिस लेप का उपयोग करती हैं वो सिर्फ गंध मिटना के लिए ही नहीं बल्की कई और काम आता है।ये खास लेप इन मिलाओं को धूप से बचाने के साथ ही कीट

पतंगों से त्वचा की रक्षा करता है। इससे महिलाओं के चेहरे पर निखार आता है जिससे इनका रंग हल्का दिखाई देता है। हिंबा जनजाति महिलाएं जड़ी बूटियों का धुआं अपने शरीर में लगाती हैं। यहां के लोग मेहमानों की आवभगत के लिए अपनी बीवी के साथ सेक्स करने की छूट देते हैं।इस दौरान घर का पुरुष या तो दूसरे कमरे में सोता है या फिर घर के बाहर। हिंबा जनजाति में पुरुषों और महिलाओं को अन्य लोगों के साथ एक से अधिक संबंध बनाने की आजादी है।

सबसे सुंदर होती हैं महिलाएं

हिंबा जनजाति की महिलाएं अफ्रीका में सबसे सुंदर मानी जाती हैं।नामीबिया में हिंबा जनजाति के लोगों की संख्या करीब 50 हजार है।इनके बारे में दुनिया में काफी कुछ पढ़ा जाता है और कई रिसर्च चल रही है।

भाजपा सरकार ने कम कर दी जम्मू-कश्मीर की शान : कर्ण

» बोले- 370 हटाकर राज्य को हरियाणा, हिमाचल और उत्तराखंड से भी जूनियर बना दिया

4पीएम न्यूज़ नेटवर्क

जम्मू। केंद्र सरकार ने 2019 में अनुच्छेद 370 हटाकर जम्मू-कश्मीर को हरियाणा, हिमाचल प्रदेश और उत्तराखंड जैसे राज्यों से भी जूनियर बना दिया है। यह बात पूर्व सदर-ए रियासत एवं कांग्रेस के वरिष्ठ नेता डॉ. कर्ण सिंह कही। उन्होंने कहा, आज जम्मू-कश्मीर महाराजा के समय से बिल्कुल अलग है। हमारे पास एक बहुत ही विशेष स्थान था, जो अब नहीं है। मैं कहूंगा कि अब सबसे पहली जरूरत राज्य का दर्जा बहाल करना और चुनाव कराना है।

केंद्र शासित प्रदेश के लिए चुनाव एक गौरवशाली नगर परिषद के लिए चुनाव करने जैसा है। डॉ. कर्ण सिंह ने कहा, 1990 के दशक में कश्मीरी पंडितों का सामूहिक पलायन एक भयानक त्रासदी थी और उन घावों को भरने में लंबा समय लगेगा, लेकिन इन्हें भरना जरूरी है।

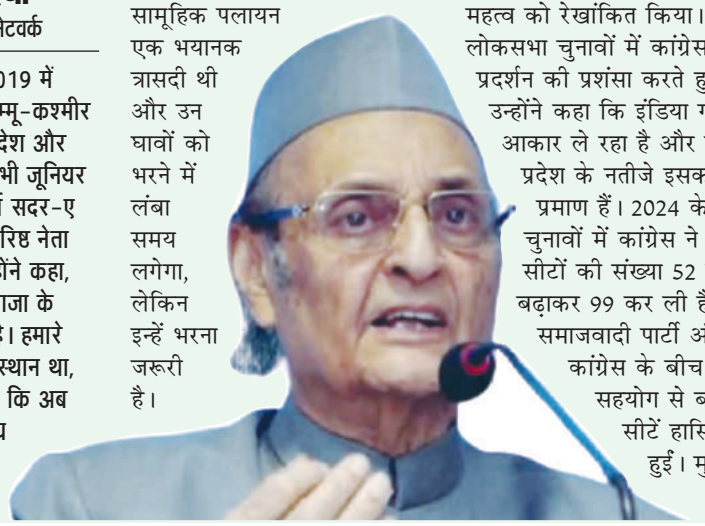

जम्मू संभाग में हाल की आतंकी घटनाओं पर चिंता व्यक्त करते हुए उन्होंने सांप्रदायिक विभाजन पैदा करने के लिए राष्ट्र के दुश्मनों के नापाक इरादों को विफल करने के महत्व को रेखांकित किया। लोकसभा चुनावों में कांग्रेस के प्रदर्शन की प्रशंसा करते हुए उन्होंने कहा कि इंडिया गठबंधन आकार ले रहा है और उत्तर प्रदेश के नतीजे इसका प्रमाण हैं। 2024 के चुनावों में कांग्रेस ने अपनी सीटों की संख्या 52 से बढ़ाकर 99 कर ली हैं। समाजवादी पार्टी और कांग्रेस के बीच सहयोग से बहुमत सीटें हासिल हुई। मुझे लगता है कि भारत के गठन में तालमेल बिठाने में थोड़ा और समय लगेगा, लेकिन यह निश्चित रूप से तालमेल बिठाएगा।

उमर को श्रीनगर से लड़ना चाहिए था

डॉ. कर्ण सिंह ने कहा, उमर अब्दुल्ला ने बारामुला से संसदीय चुनाव लड़कर गलती की है, उन्हें श्रीनगर से ही चुनाव लड़ना चाहिए था। अगर वह जीतते तो संसद में उनकी अहम भूमिका होती। इंजीनियर रशीद (निर्दलीय) की बारामुला से दो लाख से अधिक मतों से जीत को नाटकीय करार दिया, जबकि वह यूएपीए के प्रावधानों के तहत जेल में हैं।

इंडिया गठबंधन का हो रहा विस्तार

जम्मू-कश्मीर के अंतिम डोगरा शासक महाराजा हरि सिंह के बेटे डॉ. कर्ण सिंह ने 1967, 1971, 1977 और 1980 में कांग्रेस पार्टी के टिकट पर उधमपुर लोकसभा सीट से जीत हासिल की थी। 1984 में जब वह निर्दलीय तौर पर चुनाव लड़ने के लिए जम्मू चले गए तो वे संसदीय चुनाव हार गए थे।

विपक्ष राजनीति न करे सरकार सबका जवाब देगी : एमके स्टालिन

» तमिलनाडु में जहरीली शराब पीने से 61 हुई मरने वालों की संख्या

4पीएम न्यूज़ नेटवर्क

चेन्नई। तमिलनाडु के कल्लकुरिची जिले में जहरीली शराब पीने से मरने वालों की संख्या 61 हो गई है। उधर शराब त्रासदी ने मुख्यमंत्री एमके स्टालिन के नेतृत्व वाली सत्तारूढ़ डीएमके और विपक्ष में एआईएडीएमके के बीच राजनीतिक टकराव को जन्म दे दिया है। एआईएडीएमके विधायकों को विधानसभा सत्र के शेष दिनों के लिए निलंबित कर दिया गया, स्टालिन ने दोहराया कि राज्य सरकार सवालों का जवाब देने के लिए तैयार है। तमिलनाडु के मुख्यमंत्री ने कहा, लेकिन विपक्षी नेता इसे स्वीकार नहीं कर रहे हैं, और बाहर बोलना स्वीकार्य नहीं है। यह सस्ती लोकप्रियता के लिए किया गया है।

हालांकि, विपक्ष के नेता एडप्पादी के पलानीस्वामी ने दावा किया कि निलंबन पहले से ही योजनाबद्ध था। हमें बोलने की अनुमति नहीं दी गई। हमने नियमों का पालन किया, लेकिन इसे अस्वीकार कर दिया गया... हमें कल प्रश्नकाल में बोलने की अनुमति नहीं दी गई। मौतों की संख्या में वृद्धि तब हुई जब एनएचआरसी ने इस मामले में स्वत: संज्ञान लिया और तमिलनाडु के मुख्य सचिव तथा राज्य पुलिस महानिदेशक को नोटिस जारी कर एक सप्ताह के भीतर घटना पर विस्तृत रिपोर्ट मांगी। एनसीडब्ल्यू ने भी जहरीली शराब पीने की घटना में छह महिलाओं की मौत का स्वत: संज्ञान लिया है और मामले की जांच के लिए तीन सदस्यीय समिति गठित की है।

छठी बार का सांसद हूं, आप हमको सिखाएंगे: पप्पू यादव

» शपथ के तुरंत बाद सत्ता पक्ष के सांसदों पर भड़के सांसद

4पीएम न्यूज़ नेटवर्क

नई दिल्ली। बिहार के पूर्णिया से निर्दलीय सांसद पप्पू यादव 18वीं लोकसभा के सदस्य के रूप में शपथ लेते समय एक टी-शर्ट पहने हुए थे जिस पर रीनीट लिखा था और अपनी शपथ समाप्त करते हुए उन्होंने, रीनीट, बिहार के लिए विशेष दर्जा सीमांचल जिंदाबाद, मानवतावाद जिंदाबाद, भीम जिंदाबाद, संविधान जिंदाबाद के नारे लगाए। हालांकि, इसको लेकर भाजपा ने आपत्ती जताई। संसदीय कार्य मंत्री किरेन रिजिजू और प्रोटेम स्पीकर ने उन्हें रोका। ट्रेजरी बेंच के सदस्यों के साथ-साथ किरेन रिजिजू से उनकी तीखी नोकझोंक भी हुई।

सत्ता पक्ष के सांसदों की तरफ निशाना साधते हुए कहा, मैं 6 बार का सांसद हूं। आप मुझे सिखाएंगे? उन्होंने आगे कहा कि आप कृपा पर जीते होंगे। मैं निर्दलीय जीता हूं। पप्पू

यादव बोले- मैं चौथी बार निर्दलीय चुनाव जीतकर यहां आया हूं। पप्पू ने मैथिलि भाषा में शपथ ली है। पप्पू यादव ने एक्स पर लिखा कि प्रणाम पूर्णिया, सलाम पूर्णिया, जोहार पूर्णिया। शपथ ग्रहण के साथ संसदीय जीवन की एक और पारी शुरू हो गई। उद्देश्य है पूर्णिया मॉडल पूरे बिहार में सेवा, न्याय और विकास की राजनीति का आदर्श बने। शपथ ग्रहण के दौरान रिनीट का डिमांड किया और बिहार को विशेष राज्य का दर्जा देने का मांग किया।

अकाली दल को खत्म करने की साजिश कर रही बीजेपी : दलजीत

» लोकसभा चुनाव में हार के बाद सुखबीर के खिलाफ तेज होने लगी आवाज

4पीएम न्यूज़ नेटवर्क

चंडीगढ़। शिरोमणि अकाली दल में सब कुछ ठीक नहीं है। पार्टी के वरिष्ठ नेता डॉ. दलजीत सिंह चीमा ने कहा कि भाजपा की शह पर पार्टी को खत्म करने का काम किया जा रहा है, लेकिन पार्टी विरोधी लोगों को इसमें सफल नहीं होने दिया जाएगा। उन्होंने कहा कि चुनाव में खराब के प्रदर्शन के बाद भी शिअद अपने स्टैंड पर कायम है कि उसने भाजपा के साथ गठबंधन न करके सही किया है। आगे भी पार्टी उनके साथ गठबंधन में नहीं जाएगी। उन्होंने कहा कि भाजपा व आप दोनों ही शिअद को खत्म करने के लिए काम कर रही हैं।

साथ ही पार्टी में भी कुछ लोग भाजपा की हिमायत कर रहे हैं, क्योंकि शिअद ने पंथक व पंजाब के मुद्दों के

साथ समझौता नहीं करने का फैसला लिया था। सुखबीर सिंह बादल की अध्यक्षता में जब चंडीगढ़ में जिला प्रधानों व हलका प्रभारियों की बैठक चल रही थी, तब कई वरिष्ठ नेता जालंधर में जुटे थे। इन सीनियर नेताओं ने जालंधर में एक बैठक आयोजित कर पार्टी प्रधान सुखबीर बादल को बदलने की मांग कर दी। जालंधर में वरिष्ठ नेता प्रेम सिंह चंदूमाजरा ने कहा कि सभी वरिष्ठ नेता एक जुलाई को अकाल तख्त पर मत्था टेकने के बाद वहीं से शिरोमणि अकाली दल बचाओ लहर की शुरुआत करेंगे। इस बैठक में चंदूमाजरा के साथ सिकंदर सिंह मलूका, सुरजीत सिंह, रखड़ा, बीबी जागीर कौर व अन्य नेता मौजूद थे। इस मीटिंग को बगावत के तौर पर देखा जा रहा है।

पार्टी के हितों से ऊपर कुछ नहीं : सुखबीर

प्रधान बादल ने बैठक को संबोधित करते हुए कहा कि उनके लिए पार्टी के हितों से ऊपर कुछ भी नहीं है। लोकसभा चुनाव में भाजपा के साथ समझौते का भ्रम केवल उन लोगों के बीच था, जो खालसा पंथ के हितों और सिद्धांतों की कीमत पर भी भाजपा के साथ गठबंधन करना चाहते थे। उन्होंने कहा कि उन्होंने लोकसभा चुनाव से पहले ही कोर कमेटी को साफ कर दिया था कि वह बीजेपी के साथ गठबंधन के खिलाफ हैं. उन्होंने कहा कि पार्टी अध्यक्ष होने के नाते मैं संप्रदाय, किसानों, गरीबों और वंचित लोगों के हितों के साथ विश्वासघात नहीं कर सकता।

भारत के पास इंग्लैंड से बदला लेने का मौका

» सेमीफाइनल में जायसवाल को मिलेगा मौका!

» कल होने वाले दूसरे मुकाबले में अफगानिस्तान और दक्षिण अफ्रीका में होगी जंग

4पीएम न्यूज़ नेटवर्क

गयाना। वेस्टइंडीज और अमेरिका की सह-मेजबानी में जारी टी20 विश्वकप 2024 अब अपने चरम की तरफ बढ़ रहा है। सुपर-8 के मुकाबले खत्म हो चुके हैं और अब 27 जून को सेमीफाइनल के मैच खेले जाएंगे। पहला मुकाबला अफगानिस्तान और दक्षिण अफ्रीका के बीच भारतीय समयानुसार सुबह छह बजे से खेला जाएगा। वहीं, दूसरा मैच रात आठ बजे भारत और इंग्लैंड के बीच प्रोविडेंस में खेला जाएगा। इस मुकाबले में भारतीय टीम के

पास इंग्लैंड से बदला लेने का सुनहरा मौका है। क्योंकि टी20 विश्व कप 2022 में इंग्लैंड ने भारत को सेमीफाइनल में 10 विकेट से हराया था। इंग्लैंड ने जोस बटलर और एलेक्स हेल्स की अगुवाई में शानदार प्रदर्शन करते हुए भारत को करारी शिकस्त दी थी। भारत ने पहले बल्लेबाजी करते हुए 169 रनों का लक्ष्य तैयार किया था जिसे इंग्लैंड ने 16 ओवर में हासिल कर लिया था। मौजूदा टूर्नामेंट में भारतीय टीम अच्छा प्रदर्शन कर रही है।

टी20 क्रिकेट मैच में भारत का पलड़ा भारी

नॉकआउट मैच में भारतीय टीम एक बार फिर रोहित शर्मा की अगुवाई में जोस बटलर की सेना का सामना करती नजर आएगी। टी20 क्रिकेट में दोनों टीमों के बीच 23 बार भिड़ंत हुई है जिसमें भारत का पलड़ा भारी है। टीम इंडिया को 12 मैचों में जीत मिली है जबकि इंग्लैंड ने 11 मुकाबलों में जीत का स्वाद चखा है। वहीं, टी20 विश्व कप के इतिहास में इंग्लैंड का भारत से चार बार आमना-सामना हुआ है। दोनों ही टीमों ने दो-दो मैच जीते हैं।

केजरीवाल की गिरफ्तारी पर उठा सियासी बवंडर

आप ने भाजपा व कोर्ट पर उठाए सवाल, अदालत ने सीबीआई को दिल्ली के सीएम को गिरफ्तार करने की अनुमति दी

» आप संयोजक ने अंतरिम रोक के खिलाफ याचिका वापस ली

4पीएम न्यूज़ नेटवर्क

नई दिल्ली। दिल्ली की एक अदालत ने केंद्रीय अन्वेषण ब्यूरो (सीबीआई) को कथित आबकारी घोटाले में मुख्यमंत्री अरविंद केजरीवाल को औपचारिक रूप से गिरफ्तार करने की बुधवार को अनुमति दे दी। इसको लेकर सियासत भी शुरू हो गई है। आप ने मोदी सरकार को घेरा है। उधर सीएम केजरीवाल ने सुप्रीम कोर्ट से अंतरिम जमानत की याचिका वापस ले ली है।

विशेष न्यायाधीश अमिताभ रावत के आदेश के बाद सीबीआई ने केजरीवाल को गिरफ्तार कर लिया। केंद्रीय जांच एजेंसी ने अदालत से केजरीवाल को गिरफ्तार करने की अनुमति देने का अनुरोध किया था। आम आदमी पार्टी (आप) के नेता को तिहाड़ केंद्रीय कारागार से अदालत में पेश किया गया था। केजरीवाल आबकारी घोटाले से जुड़े धन शोधन मामले की जांच के सिलसिले में जेल में हैं। इस मामले की जांच प्रवर्तन निदेशालय (ईडी) कर रहा है।

सीबीआई की गिरफ्तारी का कोर्ट में हुआ जिक्र

सुनवाई के दौरान केजरीवाल के वकील अभिषेक मनु सिंघवी ने कहा कि हाईकोर्ट के फैसले ने जमानत के आदेश में कई कमियां गिना दी हैं। मेरे मुवक्किल को सीबीआई ने भी गिरफ्तार कर लिया है।

हम इस याचिका को वापस लेकर नई याचिका दाखिल करना चाहते हैं। उसमें सभी बातों का उल्लेख किया जाएगा। सुप्रीम कोर्ट ने सिंघवी को नई याचिका दायर करने की इजाजत दी।

हाईकोर्ट पूर्वाग्रह से ग्रस्त : सौरभ भारद्वाज

बता दें कि हाईकोर्ट के फैसले पर आम आदमी पार्टी ने कहा था कि वह केजरीवाल की जमानत को लेकर सुप्रीम कोर्ट का रुख करने वाली है। पार्टी ने कहा कि वह दिल्ली हाईकोर्ट के आदेश से असहमत है। दिल्ली सरकार में मंत्री सौरभ भारद्वाज ने कहा कि हाईकोर्ट ने निचली अदालत के फैसले पर ऐसे समय में रोक लगाई है, जब उसके आदेश की प्रति अपलोड भी नहीं की गई है। मुझे लगता है कि हाईकोर्ट पूर्वाग्रह से ग्रस्त था। हम सुप्रीम कोर्ट का रुख करेंगे। हम कानूनी टीम रणनीति पर फैसला करेगी।

केजरीवाल को फंसाने की साजिश : संजय सिंह

तिहाड़ जेल में बंद अरविंद केजरीवाल से सीबीआई ने पूछताछ की थी। उनकी गिरफ्तारी की भी खबर सामने आई थी, जिसे सीबीआई ने खारिज कर दिया। आप नेता और राज्यसभा सांसद संजय सिंह ने आरोप लगाया कि बीजेपी केजरीवाल को फर्जी मामले में फंसाने के लिए सीबीआई के अधिकारियों के साथ मिलकर साजिश रच रही है. उन्होंने कहा कि हमें सूत्रों से पता चला है कि बीजेपी ने सीबीआई अधिकारियों के साथ मिलकर केजरीवाल को फंसाने की योजना बनाई है।

वकील ने सीबीआई की गिरफ्तारी पर उठाए सवाल

नई आबकारी नीति मामले में दिल्ली के मुख्यमंत्री अरविंद केजरीवाल को बुधवार (26 जून, 2024) को सीबीआई ने गिरफ्तार किया है. उन्हें राउज एवेन्यू कोर्ट में पेश किया गया। कोर्ट में सीबीआई की गिरफ्तारी पर सवाल उठाते हुए केजरीवाल के वकील विवेक जैन ने सवाल किया कि वह गवाह से आरोपी कैसे बन गए।

दिल्ली हाईकोर्ट के फैसले के खिलाफ सुप्रीम कोर्ट में हुई सुनवाई, नई याचिका दाखिल करेंगे सीएम

दिल्ली शराब नीति मामले में गिरफ्तार किए गए मुख्यमंत्री अरविंद केजरीवाल की याचिका पर सुप्रीम कोर्ट में बुधवार (26 जून) को सुनवाई हुई। इस दौरान केजरीवाल ने अपनी रिहाई पर दिल्ली हाईकोर्ट की अंतरिम रोक के खिलाफ याचिका को सुप्रीम कोर्ट से वापस ले लिया है। उन्होंने कहा कि हाईकोर्ट ने जमानत के निचली अदालत के आदेश में कई कमियां गिनाई हैं। इसे चुनौती देते हुए मैं नई याचिका दाखिल करना चाहता हूं। दरअसल, केजरीवाल को दिल्ली शराब नीति मामले में निचली अदालत से जमानत मिली थी। अदालत ने कहा कि प्रवर्तन निदेशालय (ईडी) केस में अपराध की आय को केजरीवाल से जोड़ने वाले सबूत पेश करने में विफल हुई है। हालांकि, अगले ही दिन यानी मंगलवार (25 जून) को दिल्ली हाईकोर्ट ने केजरीवाल की जमानत पर रोक लगा दी। आम आदमी पार्टी (आप) के मुखिया केजरीवाल ने हाईकोर्ट से जमानत पर लगी रोक को सुप्रीम कोर्ट में चुनौती दी थी।

केजरीवाल की बिगड़ी तबीयत

कोर्ट में सुनवाई के दौरान सीएम केजरीवाल की तबीयत बिगड़ गई। सीबीआई ने दिल्ली के मुख्यमंत्री अरविंद केजरीवाल को बुधवार को राउज एवेन्यू कोर्ट में पेश किया। कोर्ट में सुनवाई के दौरान अरविंद केजरीवाल का शुगर लेवल गिर गया। इसके बाद उन्हें चाय और बिस्किट खिलाने के लिए कोर्ट रूम से बाहर लाया गया। इसके बाद उन्हें अहलमद रुम में ले जाया गया। इस दौरान उनके साथ पत्नी सुनीता केजरीवाल भी मौजूद हैं।

पूरी ताकत से अब राहुल गांधी के निशाने पर होगी एनडीए सरकार

» लोकसभा में नेता प्रतिपक्ष बनाए गए, अखिलेश को भी मिलेगी अहम जिम्मेदारी

4पीएम न्यूज़ नेटवर्क

नई दिल्ली। भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस ने अपने पूर्व अध्यक्ष और उत्तर प्रदेश के रायबरेली लोकसभा निर्वाचन क्षेत्र से सांसद राहुल गांधी से आग्रह किया था कि वह निचले सदन में नेता प्रतिपक्ष का जिम्मा संभालें। इस पर राहुल गांधी ने कांग्रेस कार्यसमिति में कहा था कि वह इस पर विचार करेंगे। मंगलवार को पार्टी के राष्ट्रीय अध्यक्ष मल्लिकार्जुन खरगे ने ऐलान किया कि राहुल गांधी ही नेता प्रतिपक्ष होंगे।

लोकसभा में अगर किसी दल को कुल सीटों का 10 फीसदी या उससे ज्यादा हासिल होता है तो वह विपक्षी दल का दर्जा हासिल करता है। साल 2014 के बाद पहली बार कांग्रेस को लोकसभा में विपक्ष का दर्जा मिलेगा। साल 2014 में कांग्रेस को 44 और साल 2019 में 52 सीटें मिलीं थीं।

मां सोनिया गांधी के रास्ते पर चलेंगे राहुल

साल 1999 में जब सोनिया गांधी ने लोकसभा में नेता प्रतिपक्ष का जिम्मा संभाला तब उन्होंने कई कमेटियां बनाई थीं। सोनिया ने मनमोहन सिंह, अर्जुन सिंह, सलमान खुर्शीद, प्रणब मुखर्जी, मणि शंकर अय्यर, आनंद शर्मा, पृथ्वीराज चव्हाण, जयराम रमेश, सुरिंदर सिंह सिंगला, नटवर सिंह, मार्ग्रेट अल्वा, सुखबंस कौर भिंडर, राजेश पायलट, बलराम जाखड़, एसएस सुरजेवाला, पीसी चाको, को अलग-अलग मंत्रालयों के काम-काज देखने और लोकसभा सत्र के दौरान जरूरी मुद्दे उठाने की जिम्मेदारी दी थी।

संसद में विरोध और सड़क के विरोध में अंतर : बिरला

बोले- संसदीय मर्यादा का पालन करूंगा, लोकसभा स्पीकर बनने पर सभी दलों ने दी शुभकामनाएं

4पीएम न्यूज़ नेटवर्क

नई दिल्ली। ओम बिरला को लोकसभा का नया स्पीकर चुन लिया गया है। लोक सभा अध्यक्ष के चुनावी प्रक्रिया के बाद पीएम मोदी ने सदन में अपने मंत्रिपरिषद से परिचित कराया। इससे पहले लोकसभा स्पीकर ओम बिरला ने सदन को संबोधित किया। लोकसभा स्पीकर ओम बिरला ने कहा कि गतिरोध सदन की परंपरा नहीं है बेल में आना परंपरा नहीं है। जो संसदीय मर्यादा है उसका पालन करने की जिम्मेदारी आपने मुझे दी है और वो मैं करूंगा। इसके लिए मुझे कई बार कठोर निर्णय लेने पड़ते हैं, संसद में विरोध और सड़क के विरोध में अंतर होना चाहिए, क्योंकि हमें जनता ने चुनकर भेजा है।

लोकसभा स्पीकर ओम बिरला ने अपने संबोधन में कहा कि संसद के इस नए भवन में नए ऐतिहासिक कानून पारित हुए, जिसका हम इंतजार कर रहे थे। नारी शक्ति वंदन अधिनियम भी पारित हुआ। साथ ही कई अन्य मुद्दों पर चर्चा हुई और कई महत्वपूर्ण विधेयक पारित हुए, मैं संविधान निर्माण में भूमिका निभाने वालों को नमन करता हूं,जिन्होंने ऐसा संविधान बनाया जो कि आज भी हमारा मार्गदर्शन कर रहा है।

ओम बिरला ने हरसिमरत को टोका

हरसिमरत कौर ने स्पीकर चुने जाने पर ओम बिरला को बधाई दी। इस मौके पर उन्होंने कहा कि एक छोटे से राज्य की छोटी सी क्षेत्रीय पार्टी का जो मेंबर यहां पहुंचा है। जहां इस सदन में मैंने देखा जो पार्टी राज्य में एक-दूजे के साथ लड़ती है, लेकिन यहां समझौते कर बैठी है। इसी दौरान उन्हें लोकसभा स्पीकर ने टोकते हुए कहा कि भाषण बात में देना आप, प्लीज नो।

अध्यक्ष से संरक्षण की उम्मीद करता हूं : चंद्रशेखर आजाद

आजाद समाज पार्टी के चीफ चंद्रशेखर ने लोकसभा स्पीकर चुने जाने पर ओम बिरला को बधाई दी। चंद्रशेखर ने कहा कि बहुत सारे सदस्यों ने आपकी तारीफ की। मुझे परेशानी आने पर आपने मेरा संरक्षण किया और मैं आपसे संरक्षण की उम्मीद करता हूं। मेरी ये भी प्रार्थना है कि आप लोकतंत्र के रक्षक हैं और प्रकृति आपको लोकतंत्र की रक्षा करने की ताकत प्रदान करें।

छोटी पार्टियों को मौका मिले : ओवैसी

ओवैसी ने स्पीकर ओम बिरला को बधाई देते हुए कहा कि मेरी आपसे गुजारिश है कि आप छोटी पार्टियों को मौका दीजिए, भले ही सत्तारुढ़ दल की तादाद ज्यादा है।

पीएम मोदी को जंगल राज के जंगली सपने सिर्फ चुनाव के दौरान आते हैं : तेजस्वी यादव

» राजद नेता ने तीन दिनों में 33 आपराधिक घटनाओं की सूची सौंपते हुए पूछा सवाल

4पीएम न्यूज़ नेटवर्क

पटना। लोकसभा चुनाव 2024 के दौरान प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने बिहार की लगभग सभी जनसभाओं में लालू प्रसाद यादव और राबड़ी देवी के शासनकाल को जंगल राज बताते हुए इसके दोहराव को रोकने की अपील की थी।

प्रधानमंत्री मोदी के नेतृत्व वाली राष्ट्रीय जनतांत्रिक गठबंधन ने बिहार की 40 में से 30 सीटें जीत भी लीं। अब बिहार में विधानसभा चुनाव की तैयारी है। इस तैयारी के बीच बिहार विधानसभा में विपक्ष के नेता और राज्य के पूर्व उप मुख्यमंत्री तेजस्वी यादव ने प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी से पूछा है कि क्या उन्हें जंगल राज के जंगली सपना सिर्फ चुनावी सभाओं के दौरान तेजस्वी यादव ने प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी से पूछा है कि क्या उन्हें जंगल राज के जंगली सपने सिर्फ चुनाव के दौरान आते हैं? तेजस्वी ने तीन दिनों में बिहार के अंदर 33 बड़ी आपराधिक घटनाओं की सूची सौंपते हुए यह सवाल पूछा है।

राजद नेता ने पीएम को लिखा पत्र

आदरणीय प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी जी, आपके पावन मुखारविंद से बिहार में दिन दुगुनी रात चौगुनी वृद्धि कर रहे रिकॉर्डतोड़ अपराध पर दो शब्द निंदा की अपेक्षा है। वैसे भी सभी न्यायप्रिय एवं विवेकशील बिहारी कहते है कि आपको चुनाव के वक्त ही जंगलराज के जंगली सपने आते है। आपकी जानकारी और संज्ञान के लिए दिन की आपराधिक घटनाओं की दर्दनाक अल्प सूची सांझा कर रहा हूँ।

विधानसभा चुनाव में नीतीश ही चेहरा

राष्ट्रीय जनतांत्रिक गठबंधन में भले ही भारतीय जनता पार्टी के पास सबसे ज्यादा विधायक हो लेकिन विधानसभा चुनाव वह मुख्यमंत्री नीतीश कुमार के नेतृत्व में ही लड़ेगी। पार्टी के केंद्रीय नेतृत्व ने फिर से यह बात स्पष्ट कर दी है। 2020 के विधानसभा चुनाव में जिस तरह से एनडीए उम्मीदवार सीएम नीतीश कुमार के नेतृत्व में चुनावी मैदान में उतरे थे, उसी तरह इस बार यानी 2025 के चुनाव में भी उतरेंगे।

स्वामी 4 पीएम न्यूज नेटवर्क्स प्राइवेट लिमिटेड के लिए मुद्रक एवं प्रकाशक संजय शर्मा द्वारा आस्था प्रिंटर्स, 5/600, विकास खण्ड, गोमती नगर, लखनऊ-226010 (यूपी) से मुद्रित एवं 5/600, विकास खण्ड, गोमती नगर, लखनऊ-226010 (यूपी) से प्रकाशित। संपादक - संजय शर्मा, विधि सलाहकार: सत्यप्रकाश श्रीवास्तव, मोहम्मद हैदर, वित्तीय सलाहकार: संदीप बंसल, कार्टूनिस्ट: हसन जैदी, दूरभाष: 0522- 4078371 | Email: daily4pm@gmail.com | website: www.4pm.co.in | RNI-UPHIN/2015/62233 डाक पंजी. सं- SSP/LW/NP-495/2018-2020 *इस अंक में प्रकाशित समस्त समाचारों के चयन एवं संपादन हेतु पी.आर.बी. एक्ट के अंतर्गत उत्तरदायी। समस्त विवाद लखनऊ न्यायालय के अधीन ही होंगे।